दिसम्बर-२०२० ◆ वर्ष ९ ◆ अंक ०८ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

दिसम्बर-२०२०

हमको संबल देता,
देखो कौन खड़ा है,
भाग्य और पुरुषार्थ में,
बोलो कौन बड़ा है।
इस अजीब उलझन का उत्तर,
कठिन बड़ा है,
दयानन्द कहते,
निश्चित पुरुषार्थ बड़ा है।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १० ११०

मसालों का अम्बार, एम.डी.एच. परिवार।
MDH
मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले
सच - सच
Garam masala
Kitchen King
Sambhar masala
Sabzi masala
DEGGI MIRCH
Shahi Paneer masala
Chana masala
Pav Bhaji masala
Chunky Chat masala
RASOORI METHI
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 फोन नं० 011-41425106-07-08
ESTD. 1919
E-mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक – सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1000
आजीवन	- 1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	- 400 रु.	$ 100
वार्षिक	- 100 रु.	$ 25
एक प्रति	- 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२१
मार्गशीर्ष कृष्णा सप्तमी
विक्रम संवत्
२०७७
दयानन्दाब्द
१९६

December - 2020

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन
3500 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

रामायण काल में यज्ञ का स्थान

०७

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वि–जन्मशताब्दी लेखमाला

१२

०९

समाचार २८

हलचल २९

०४	वेद सुधा
०६	कैसे मैं बिहाओं अपनी.....
१९	स्वामी श्रद्धानन्द
२०	माता-पिता की सेवा
२२	वेदों की उपेक्षा दुर्भाग्यपूर्ण है
२५	सिर्फ देह ही सजाते रहे
२७	स्वास्थ्य ही वास्तविक सम्पत्ति
३०	ईश्वर भक्ति क्यों?

स्वामी: श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ९ अंक - ०८

मुद्रण: द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 07976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

मनुष्य बन

तन्तु तन्वन्नजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान्।
अनुल्बणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।। – ऋग्वेद १०/५३/६

रजसः– संसार का, **जोगुवाम्**– निरन्तर ज्ञान और कर्म का, **तन्तुम्**– ताना-बाना, अनुष्ठान करनेवालों के **तन्वन्**– तनता-बनुता हुआ भी, **अनुल्बणम्**– उलझन रहित, **भानुम्**– प्रकाश के, **अपः**– कर्म को, **अनु-इहि**– पीछे जा। **वयत**– विस्तृत करो। (इन उपायों से) **धिया**– बुद्धि से, **मनुः भव**– मनुष्य बन, (और) **कृतान्**– बनाये हुए, परिष्कृत किये हुए, **दैव्यम्**– देवों के हितकारी, **ज्योतिष्मतः**– ज्योतिर्मय, प्रकाशयुक्त, **जनम्**– जन को, सन्तान को, **पथः रक्ष**– मार्गों की रक्षा कर, **जनया**– (जनय) उत्पन्न कर।

व्याख्या

संसार को सदा जिसकी आवश्यकता रही है और रहेगी तथा इस समय भी जिसकी अत्यन्त आवश्यकता है, उस तत्व का उपदेश इस मन्त्र में किया गया है। वेद में यदि और उपदेश न होता, केवल यही मन्त्र होता, तब भी वेद का आसन संसार के सभी मतों और सम्प्रदायों से उच्च रहता।

वेद कहता– **मनुर्भव**- मनुष्य बन।

आज का संसार ईसाई बनने पर बल देता है, अर्थात् ईसा का अनुकरण करने के लिए यत्नवान् है। संसार का एक बड़ा भाग बौद्ध बनने में लगा हुआ है, अर्थात् बुद्ध के चरणचिह्नों पर चलता हुआ 'बुद्धं शरणं गच्छामि' का नाद गुंजा रहा है। इसी प्रकार संसार का एक भाग मुहम्मद का अनुगमन करने में तत्पर है। महापुरुषों का अनुकरण प्रशंसनीय है, किन्तु थोड़ा-सा विचार करें तो एक विचित्र दृश्य सामने आता है, अद्भुत तमाशा देखने को मिलता है। ईसाईयों ने ईसा का नाम लेकर जो कुछ अपने भाईयों के साथ किया, उसकी स्मृति ही मनुष्य को कम्पा देती है। बिल्ली के बच्चे तक की रक्षा करने वाले मुहम्मद की उम्मत का इतिहास भी भाईयों के रक्त से रंजित है। आज जिसे मनुष्य कहते हैं, वह मनुष्यता का वैरी हो रहा है। हमने संकीर्णता के संकुचित दल बना डाले। एक दल दूसरे दल को दलने, कुचलने पर तत्पर है। आज मनुष्य मनुष्य का वैरी हो रहा है, अतः वेद कहता है- मनुर्भव- मनुष्य बन। ईसाई या बौद्ध या मुसलमान बनने या किसी दूसरे सम्प्रदाय में, सम्मिलित होने में वह रस कहाँ, जो 'मनुष्य' बनने में है। ईसाई बनने से केवल ईसाईयों को ममत्व से देखूँगा। बौद्ध होने से अन्य सबको असद्धर्मी मानूँगा। मुसलमान होकर मोमिनों को ही अपने प्यार का अधिकारी मानूँगा, किन्तु मनुष्य बनने पर तो सारा संसार मेरा परिवार होगा, सब पर मेरा एक समान प्यार होगा। वसुधा को कुटुम्ब माना, तो सारे कुटुम्ब से प्यार करना चाहिए। कुटुम्ब में समता का साम्राज्य होता है। विषमता का व्यवहार कुटुम्ब की एकता पर वज्रप्रहार है। समता स्थिर रखने के लिए स्नेही का व्यवहार करना होता है, तभी तो वेद ने कहा–

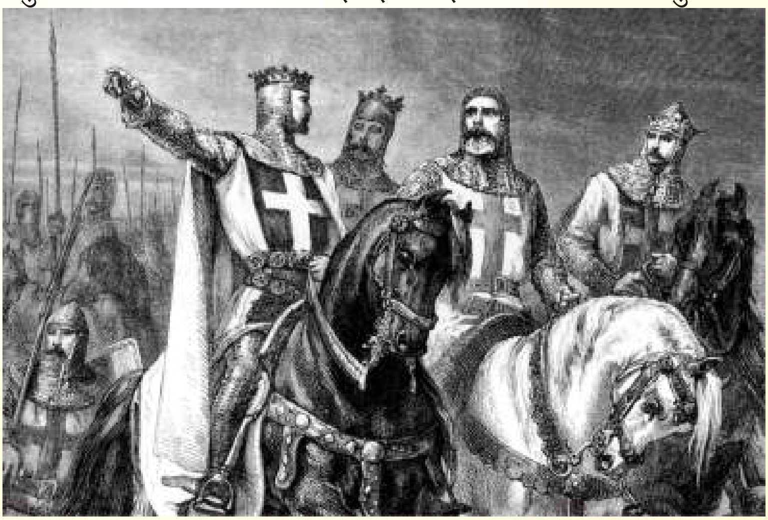

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।। – यजुर्वेद ३६/१८

सबको मित्र की स्नेहसनी आँख से हम देखें।
यहाँ वेद मनुष्य-सीमा से भी आगे निकल गया। प्यार का अधिकारी केवल मनुष्य ही न रहा, वरन् सब भूत- प्राणी हो गये। यह उचित भी है, क्योंकि 'मनुष्य' शब्द का अर्थ है- **'मत्वा कर्माणि सीव्यति'** (निरुक्त ३/७) जो विचार कर कर्म करे, अन्धाधुन्ध कर्म न करे। कर्म करने से पूर्व जो भली प्रकार विचार करे कि मेरे इस कर्म का क्या फल होगा? किस-किस पर इसका क्या-क्या प्रभाव होगा? यह कर्म भूतों के दुःख-प्राणियों की पीड़ा का कारण बनेगा या भूतहित साधेगा? मनुष्य यदि सचमुच मनुष्य बन जाये तो संसार से सारा उपद्रव दूर हो जाए। देखिए, थोड़ा विचारिए; थोड़ा-सा मनुष्यत्व काम लाइए। वेद के इस उपदेश के महत्व को हृदयंगम कीजिए।
धार्मिक दृष्टि से विचारे करें, तो मनुष्य समाज के दो बड़े विभाग बन सकते हैं- एक ईश्वरवादी, दूसरा अनीश्वरवादी। सभी ईश्वरवादी ईश्वर को 'पिता' मानते हैं। वेद इससे भी आगे जाता है, वह ईश्वर को पिता के साथ माता भी मानता है। यथा-

त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अधा ते सुम्नमीमहे।। - ऋग्वेद ८/९८/११

अर्थात् सबको ठिकाना देनेवाले! सचमुच तू हमारा पिता है। जीवों के उत्पत्ति आदि नानाविध कर्म करनेवाले परमात्मन्! तू हमारी माता है, अतः हम तेरा उत्तम हृदय (Good wishes) चाहते हैं।
माता-पिता की शुभाशीः, शुभकामना सन्तान का कितना कल्याण करती है? परमपिता दिव्य माता की भव्यभावना हमारा कितना इष्ट कर सकती है, इसकी पूरी कल्पना कौन कर सकता है?
प्रभु हमारे माता-पिता, हम उनकी सन्तान, किन्तु कुसन्तान, जघन्य सन्तान, अयोग्य सन्तान, विद्रोही सन्तान। हम आपस में लड़ते हैं। भाई-भाई की लड़ाई! भगवान् ने कहा था-

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। - ऋग्वेद १०/१९१/२

तुम्हारी चाल एक हो, तुम्हारे बोल एक हों, तुम्हारा ख्याल एक हो।
हमारी चाल आज भिन्न-भिन्न ही नहीं, परस्पर विरुद्ध है। आज हम संवादी नहीं, विवादी हो गये हैं। आज हम 'संवाचः' नहीं 'विवाचः' हो गये हैं। इसका कारण हमारा 'वैमनस्य' मनोभेद=मतभेद=विचारभेद है। एक चाल=संगति, एक बोल=सम-उक्ति के लिए 'सांमनस्य'=मत की एकता, मत की अभिन्नता, विचार की समता की आवश्यकता है।
पिता का आदेश है, माता का सन्देश है- सं गच्छध्वम्। हम उसके विपरीत चलकर पिता का अधिकार, माता का प्यार कैसे पा सकते हैं। मानव! ठहर! सोच! कहाँ चला गया? कहाँ बिदक गया?
मैं बिदक गया! बहक गया! वज्रभान्ति! ईश्वर-ईश्वर कह रहे हो। कहाँ है ईश्वर? जब ईश्वर ही नहीं, तब उसका माता-पिता होना कैसे? और हम सब मनुष्य 'भाई-भाई कैसे? **सति कुडये चित्रम्-** आधार होगा, तो चित्र बनेगा?
अच्छा! ईश्वर को ही जवाब! जाने दो, तुम्हारा मन ईश्वर को नहीं मानता, न सही, भगवान् का मानना बड़े भाग्य की बात है, किन्तु भगवान् को न मानकर भी मानव-मानव का भाई है।
कैसे?

सुनो! सावधान होकर सुनो। तुम दो की सन्तान हो न! घबराने क्यों लगे? इसमें अचम्भे की बात ही क्या है? माता और पिता के संयोग से ही मनुष्य की उत्पत्ति होती है। अकेली स्त्री से सन्तान नहीं हो सकती। अकेले पुरुष से कुछ नहीं बनता। सृष्टि चलाने के लिए स्त्री-पुरुष का, प्रकृति-पुरुष का, रयि-प्राण का संयोग आवयश्क है, अर्थात् दो मिले, तो तुम एक आये, अर्थात् तुममें दो का रुधिर आया और ये दो भी तो दो-दो के सन्तान हैं, अर्थात् हममें चार का रुधिर आया। उन चार के जो और सन्तान हुये, उनमें भी उनका रुधिर आया। कहो, वे और तुम सब सपिण्ड हुए या नहीं? तनिक और आगे चलो, वे चार आठ के सन्तान, वे आठ सोलह की, इस प्रकार ज्यों-ज्यों ऊपर को जाओगे, अपना खून का सम्बन्ध बढ़ता हुआ पाओगे।
कहो, हुए न हम भाई-भाई।
बताओ, भाई-भाई का व्यवहार कैसा होना चाहिए? क्या भाई-भाई का गला काटे, यह अच्छा है अथवा भाई के पसीने के बदले अपना खून बहा दे, यह अच्छा है?
भाई को भाई से भय नहीं होता। भाई को अपने से अभिन्न माना जाता है। डर होता है दूसरे से-

द्वितीयाद्वै भयं भवति। भाई को देखते ही हृदय हर्षित हो उठता है। आ! विश्व को- संसार को भाई बना। भय को भगा। सर्वत्र निर्भय, निष्कण्टक आ और जा।

कहो, वेद का 'मनुर्भव' कहना कल्याणसाधक है या नहीं?

निस्सन्देह मनुष्य बनना संसार में शान्ति-स्थापन करने का एक मात्र साधन है। सभी मनुष्य 'मनुष्य बन जाएँ' तो यह मार काट, यह लूट-खसूट उसी क्षण समाप्त हो जाए, किन्तु यह है अत्यन्त कठिन।

निस्सन्देह मनुष्यत्व प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है। शंकराचार्य जी ने कहा- **'जन्तूनां नरजन्म दुर्लभम्'**। सचमुच नर तन पाना दुस्साध्य है, किन्तु असाध्य नहीं। वेद इससे आगे जाता है। वेद कहता है- मनुष्यजन्म, नरतन तो तूने प्राप्त कर लिया 'मनुष्य' भी बन। केवल नर तनधारी ही न रह, नर मनधारी भी बन। इसी लिए वेद ने कहा- 'मनुर्भव।'

यद्यपि 'मनुर्भव' कहने से ही सब बात आ गई है, किन्तु भगवती श्रुति उसके उपाय भी देती है। वैसे तो सारा वेद ही नर-तनधारी को मनुष्य बनाने के लिए है, किन्तु इस मन्त्र में जो कुछ कहा है, उस पर भी यदि आचरण किया जाए तो अभीष्ट सिद्ध हो जाए।

- स्वामी वेदानन्द तीर्थ

(साभार- स्वाध्याय-सन्दीप)

कैसे मैं बिहाओं अपनी कुसुमियाँ

कथा सरित

भारत का इतिहास ऐसी अनेक ललनाओं की गाथाओं से भरा है जहाँ उन्होंने अपने सतीत्व की रक्षा के लिये हँसते-हँसते प्राणोत्सर्ग किया। ऐसा ही एक उदाहरण देवी कुसुमा का यहाँ प्रस्तुत है।

किशोरी कुसुमा देवी गाँव की लाड़ली थी। एक दिन वह सखियों के साथ गाँव से बाहर चली गई। तालाब में कोईन के फूल उसे अपनी ओर खींच रहे थे। सभी सखियाँ जल में कूद पड़ीं। फूलों का हार बनाकर एक दूसरे के गले में डालकर खिलखिलाकर हँस पड़ी। तभी मिर्जा तुर्क सरदार घोड़े पर सवार होकर वहाँ से गुजरा। उसका ध्यान खिलखिलाहट की ओर गया। देखकर स्तब्ध रह गया। इतना अनिंद्य सौन्दर्य! सूर्य भी एक बार देख ले तो ठुमक जाय। मिर्जा ने निश्चय किया कि जैसे भी हो इस लावण्य को प्राप्त किया जाय। उन दिनों अराजकता का बोलबोला था। उसने सिपाही भेजकर कुसुमा के पिता को बुलाकर उससे कुसुमा का विवाह अपने साथ कर देने के लिए कहा।

कुसुमा के पिता ने कहा- 'कैसे मैं बिहाओं अपनी कुसुमियाँ तू तो तुरक हम ब्राह्मण हो ना।'

यह अप्रत्याशित उत्तर सुनकर मिर्जा तिलमिला उठा। उसने सोचा एक सामान्य ब्राह्मण की इतनी हिम्मत। उसने कुसुमा के पिता को पकड़कर वहीं कैद कर लिया। जब कुसुमा को इसकी सूचना मिली कि उसके पिता को उसके लिये मिर्जा ने कैद कर लिया है। उसने मिर्जा के पास सूचना भेजी यदि तुम मेरे रूप पर मोहित हो तो मैं तुम्हारे साथ चलने को तैयार हूँ। पहले पिता को कैद से निकालो। उन्हें हाथी पर बिठाओ, माँ के लिये आभूषण, भाभी के लिये रंगीन चूनर और मेरे लिये पालकी सजाकर ले आओ।

बस अब क्या था तुर्क सरदार ने सब वस्तुएँ जुटा दीं और पालकी सजाकर पहुँच गया। रोती कुसुमा पालकी पर सवार हुई। जब बाहर पहुँची तो उसने मिर्जा से कहा थोड़ी देर पालकी रोक दे। मैं अपने पिता द्वारा बनवाये तालाब में अन्तिम बार मुँह धो लूँ। मिर्जा ने टालने की कोशिश की और कहा तुम्हारे पिता के तालाब का पानी कीचड़ से भरा है तुम मेरे तालाब का स्वच्छ पानी बरतना। कुसुमा कहने लगी-

तनियक डोलिया थमाओ मिरजवा। बाबा के सांगरवा मुंहवा धोइत होना।

तोहरा सगरवा मिरजा नित धोई हों बाबा के सगरवा दुरलभ होई है हो ना।

अब तो मिर्जा को बाध्य होकर पालकी रोकनी पड़ी। कुसुमा पालकी से उतर कर पानी के तालाब में घुसी। एक कदम दो कदम...... अरे क्या! क्या वह जल में अन्तर्ध्यान हो गई। सचमुच उसका फैसला भयानक था पर कितना गौरवशाली? भारतीय नारी ने अपने सतीत्व की रक्षा के लिए मृत्यु का वरण कर लिया-

एक घूंट पियली दूसर घूट पियली, तिसरे में गइल तराई हो ना।

सिर पै पगड़िया बांधि हंसे भइया, दूनो कुल राखेउ बहिनी कुसुमा हो ना।

कुसुमा ने अपने विवेक चातुर्य से अपने पिता को कैद से उवार, अपने प्राणोत्सर्ग कर, तुर्क मिर्जा को परास्त कर दिया। तुर्क खड़ा-खड़ा देखता रहा। जो दूसरों के मुख को कालिख लगाने चला था उसी का मुँह काला हो गया।

आत्म निवेदन

रामायण काल में यज्ञ का स्थान

साहित्य समाज का दर्पण होता है, यह अत्यन्त प्रसिद्ध उक्ति है। इसका तात्पर्य क्या है? साहित्य का सृजन किसी भी विषय को लेकर हुआ हो, जिस परिवेश में इसका सृजन हो रहा है उस परिवेश का, तत्कालीन सांकृतिक मूल्यों, धार्मिक आस्थाओं का, यहाँ तक कि तत्कालीन प्रसिद्ध इमारतों का, शिल्प आदि कलाओं का भी कहीं न कहीं उल्लेख हो ही जाता है। उदाहरण के तौर पर उपन्यास सम्राट् मुंशी प्रेमचन्द जी ने अनेक उपन्यास तथा कहानियाँ लिखी हैं, उनमें तत्कालीन सामाजिक कुरीतियों का सजीव चित्रण उकेरित किया है जिससे तत्कालीन सामाजिक ताने-बाने का सहज ही ज्ञान हो जाता है। तुलसी के भक्तियुग के बाद १७वीं शताब्दी से अठारहवीं सदी तक हिन्दी में रीतिकाव्य का अजस्र स्रोत प्रवाहित हुआ जिसमें नर-नारी के सम्बन्धों का शृंगारमूलक वर्णन प्रमुखता से मिलता है। इस काव्य का सृजन क्योंकर हुआ? इससे पूर्व का भक्ति काव्य क्यों विदा ले गया? कारण कि इस काल के प्रायः कवि राजाओं तथा रईसों के आश्रित कवि थे, जहाँ का परिवेश रसिक और वासनाओं से परिपूर्ण था। अतः इस परिवेश का प्रकटन तत्कालीन कवियों की कलम से हुआ। ऐसे वातावरण में लिखा गया साहित्य अधिकतर शृंगारमूलक और कलावैचित्र्य से युक्त था। मुगल दरबारियों के हरमों में विलासिता का प्राचुर्य था। वही प्रभाव सामंतों में व्याप्त था। कविगण इनके अधीन थे अतः उनके काव्य में शृंगार रसधारा बह उठी। नैतिकता और शुद्धिवाद के सभी निषेध, प्रयत्न उसमें बह गये। यद्यपि इस समय वीरकाव्य भी लिखा गया। मुगल शासक औरंगजेब की कट्टर साम्प्रदायिकता और आक्रामक राजनीति की टकराहट से इस काल में जो विक्षोभ की स्थितियाँ आईं उन्होंने कुछ कवियों को वीरकाव्य के सृजन की भी प्रेरणा दी। ऐसे कवियों में भूषण प्रमुख हैं जिन्होंने रीतिशैली को अपनाते हुए भी वीरों के पराक्रम का ओजस्वी वर्णन किया।

कुल मिलाकर इस समय का काव्य सामाजिक परिवेश के बारे में यह घोषणा करता है कि इस समय के कवि लोक जीवन से हट कर सामंतों के प्रभाव में आ गए थे। मुगलकालीन विलासिता और उसका भारतीयों में संक्रमण, के प्रमाण इस काल के काव्य को पढ़कर ज्ञात होते हैं। एक समीक्षक लिखते हैं- रीतिकालीन कविता दरबारी या सामंती परिवेश की देन है। उसमें वैलासिक वृत्ति ही प्रमुख थी।'

यहाँ साहित्य-विश्लेषण हमारा उद्देश्य नहीं है अतः इस दिशा में आगे न बढ़ते हुए इतना ही लिखेंगे कि किसी भी रचना से उस काल के बारे में अनेक जानकारी प्राप्त हो सकती हैं। फाह्यान जिस समय भारत में आया था यहाँ बौद्ध विहारों का बाहुल्य था परन्तु ह्वेनत्सांग जब आया तो बौद्ध विहार प्रायः विलुप्त हो गए थे। मंदिरों की बहुतायत हो गयी थी। यह सब उनके द्वारा लिखे विवरणों से ज्ञात होता है।

इस भूमिका के साथ वाल्मीकि रामायण के श्लोकों में निबद्ध तत्कालीन भारतीय संस्कृति का दर्शन हमारा उद्देश्य है। यह असंदिग्ध है कि श्रीराम के समय के सम्पूर्ण परिवेश का सर्वाधिक प्रामाणिक वर्णन वाल्मीकि रामायण में ही प्राप्त होता है। यद्यपि वाल्मीकि रामायण में भी प्रचुर प्रक्षेप हुए हैं।

वाल्मीकि रामायण के अध्येता यह मानते ही हैं कि जिस समय श्री राम वन जाने के लिए माता कौशल्या से अनुमति लेने जाते हैं तो वे उस समय अग्निहोत्र कर रहीं थीं, इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि रामायण काल में नारी को भी पुरुषों के समान ही सभी अधिकार प्राप्त थे। वे वेद का स्वाध्याय और यज्ञीय कर्मकाण्ड निष्पादित कर सकतीं थीं जिसका पूर्ण निषेध कुछ सौ वर्ष पूर्व के भारत में मिलता है। इसका अभिप्राय है कि भारत में व्याप्त कुरीतियाँ अर्वाचीन ही हैं, प्राचीन नहीं। अतः महर्षि दयानन्द का आन्दोलन अपने स्वर्णिम अतीत को ही पुनः वर्त्तमान करने के लिए था। अब यह जिज्ञासा स्वाभाविक है कि रामायण काल में यज्ञ के सम्पादन का यह इकलौता उदाहरण है अथवा तत्कालीन जन-जीवन में यह स्वाभाविक रूप से प्रतिष्ठित था। तो जैसे-जैसे हम वाल्मीकि महर्षि के साथ रामायण में प्रवेश करते जाते हैं, यह स्पष्ट होता जाता है कि यज्ञीय कर्मकाण्ड रामायण कालीन समाज में सर्वत्र उपलब्ध है। तथा यह भी कि मंदिरों व पौत्तलिक उपासना का सर्वथा अभाव ही है। इस कड़ी में हम यही दिखाने का यत्न करेंगे।

महर्षि वाल्मीकि प्रणीत रामायण में अनेकानेक स्थल ऐसे आते हैं जिनसे ज्ञात होता है कि क्या राजा, क्या ऋषिगण और क्या प्रजा सभी यज्ञशील थे और उनके जीवन में यज्ञीय कर्मकाण्ड नियमित था। बालकाण्ड के छठे सर्ग में इक्ष्वाकु कुल के राजाओं के बारे में महर्षि वाल्मीकि लिखते हैं कि जहाँ वे अतिरथी थे, धर्मात्मा थे, स्वाधीन थे वहीं वे यज्ञशील थे।

इक्ष्वाकूणामतिरथो यज्वा धर्मरतो वशी।
महर्षिकल्पो राजर्षिस्त्रिषु लोकेषु विश्रुतः॥ - वा. का. सर्ग ६/ श्लोक २

इसी सर्ग में आगे श्लोक ११ में महर्षि लिखते हैं कि अयोध्या के निवासी बलिवैश्वकर्म से रहित अशुद्ध भोजन नहीं करते थे। इसका तात्पर्य हुआ कि रामायण काल में जब भोजन बनाया जाता था तो बलिवैश्वकर्म अर्थात् बलिवैश्वदेव यज्ञ भोजन करने से पूर्व करना अनिवार्य था और पंचमहायज्ञों में से एक प्रमुख, इस यज्ञ को किए बिना जो भोजन होता था, उसे अशुद्ध माना जाता था। देखें-

नामृष्टभोजी नादाता नाप्यनङ्गदनिष्कधृक्।
नाहस्ताभरणो वापि दृश्यते नाप्यनात्मवान्॥ - वा. का. सर्ग ६/ श्लोक ११

वहीं आगे १२वें श्लोक में लिखते हैं कि उस काल में जहाँ कोई व्यक्ति न नीच था, न चोर था न सदाचार से रहित था वहीं अग्नि का आधान न करने वाला भी अर्थात् अग्निहोत्र न करने वाला कोई न था। इससे बड़ा क्या प्रमाण हो सकता है कि रामायण काल में अग्निहोत्र दैनिंदिन जीवन का अनिवार्य कर्म था। देखें-

नानाहिताग्निर्नायज्वा न क्षुद्रो वा न तस्करः।
कश्चिदासीदयोध्यायां न चावृत्तो न संकरः॥ - वा. का. सर्ग ६/ श्लोक १२

आज हम रामायण का पाठ तो करते हैं, श्री राम को अपना आराध्य भी मानते हैं परन्तु हमें साथ ही साथ ही देखना होगा जो शुभ गुण-कर्म-स्वभाव उनके जीवन में थे या उस काल के समाज में विद्यमान थे, हम उनका कितना अनुसरण करते हैं? हमारा तो यही कहना है और इस लेख को लिखने के पीछे यही तात्पर्य है कि सभी रामभक्तों को प्रतिदिन अग्निहोत्र सहित पंचमहायज्ञों का सम्पादन अवश्य करना चाहिए क्योंकि यहीं इसी सर्ग में सत्रहवें श्लोक में अतिथियज्ञ का भी वर्णन किया है कि अयोध्या में कोई भी नर या नारी ऐसा नहीं था जो कृतज्ञ न हो, दानवीर न हो, पराक्रमयुक्त न हो और साथ में अतिथियों का पूजक न हो, अर्थात् अतिथियों का सत्कार करने वाला न हो। स्पष्ट है कि अतिथियों के सम्मान करने के परम्परा रामायणकालीन समाज में विद्यमान थी।

वर्णेष्वग्र्यचतुर्थेषु देवतातिथिपूजकाः।
कृतज्ञाश्च वदान्याश्च शूरा विक्रमसंयुताः॥ - वा. का. सर्ग ६/ श्लोक १७

वाल्मीकि रामायण के चतुर्थ सर्ग में प्रकरण आता है कि जब भगवान वाल्मीकि ने २४ हजार श्लोकों, ५०० सर्ग और ६ काण्ड वाली रामायण का सृजन किया तो लव और कुश को उसके गायन हेतु प्रशिक्षित किया। ये दोनों भाई जब रामायण का गान करते थे तो सारा परिवेश मंत्रमुग्ध हो जाया करता था। उस समय लोग इन्हें कुछ न कुछ उपहार अपनी ओर से दिया करते थे।

इन उपहारों का परिगणन चतुर्थ सर्ग में ऋषि ने किया है। इन उपहारों की सूची से भी बहुत कुछ ज्ञात हो जाता है। इन उपहारों में कलश, वल्कल, मृगचर्म, मौंजी, यज्ञोपवीत, गूलर की लकड़ी का बना आसन, लंगोटी, काषाय वस्त्र के साथ-साथ यज्ञपात्र और समिधाएँ देने का भी वर्णन आता है। श्लोक २५ में स्पष्टतः यज्ञपात्र व समिधाएँ देने की बात आई है।

यज्ञभाण्डमृषिः कश्चित् काष्ठभारं तथापरः।
आयुष्यमपरे प्राहुर्मुदा तत्र महर्षयः।। - वा. का. सर्ग ४/ श्लोक २५

इस प्रकरण से भी यह सिद्ध होता है कि जहाँ तपस्वियों का जीवन अत्यन्त सादा हुआ करता था वहाँ ये नवयुवक तपस्वी अग्निहोत्र प्रतिदिन करते थे अन्यथा इनको यज्ञोपवीत, यज्ञपात्र एवं समिधाएँ देने का अन्य कोई अर्थ नहीं हो सकता है।

पुत्रेष्टि यज्ञ

यह सभी जानते हैं कि आयु अधिक होने तक भी महाराजा दशरथ के कोई संतान नहीं थी तब ऋषि मुनियों के सुझाव पर उन्होंने पुत्रेष्टि यज्ञ ही किया था, अन्य कोई टनटन-पूं-पूं का आयोजन नहीं किया था।

८वें सर्ग के तृतीय श्लोक में ऋषि ने लिखा है 'उस बुद्धिमान दशरथ ने सब पर्याप्त बुद्धि वाले धर्मात्मा मंत्रियों के साथ 'यज्ञ करना चाहिए।' ऐसा निश्चित करके (३)........

९वें श्लोक में कहा कि 'इसलिए मैं शास्त्रों की विधि से यज्ञ करना चाहता हूँ' और वशिष्ठ आदि सभी लोगों ने इसका अनुमोदन किया।

स निश्चितां मतिं कृत्वा यष्टव्यमिति बुद्धिमान्।
मन्त्रिभिः सह धर्मात्मा सर्वैरेव कृतात्मभिः।। - वा. का. सर्ग ८/ श्लोक ३
तदहं यष्टुमिच्छामि शास्त्रदृष्टेन कर्मणा।
कथं प्राप्स्याम्यहं कामं बुद्धिरत्र विचार्यताम्।। - वा. का. सर्ग ८/ श्लोक ९

२४वें श्लोक में दशरथ पुनः प्रतिज्ञा करते हैं कि 'मैं सन्तान के लिए यज्ञ करूँगा।' इस पुत्रेष्टि यज्ञ के लिए ऋष्यशृङ्ग का चयन किया गया। इनकी दिनचर्या के बारे में भी नवें सर्ग में वर्णन आता है। वहाँ श्लोक ७ में कहा गया कि 'उस यशस्वी ऋष्यशृङ्ग का इसी प्रकार अग्नि और पिता की सेवा करते हुए काल बीत गया' अर्थात् वे युवा हो गए। यहाँ अग्नि से सेवा का स्पष्ट तात्पर्य अग्निहोत्र से ही है। यहाँ इसके अलावा इसका कोई अर्थ हो नहीं सकता।

उवाच दीक्षां विशत यक्ष्येऽहं सुतकारणात्।
तासां तेनातिकान्तेन वचनेन सुवर्चसाम्।। - वा. का. सर्ग ८/ श्लोक २४
अग्निं शूश्रूषमाणस्य पितरं च यशस्विनम्।
एतस्मिन्नेव काले तु रोमपादः प्रतापवान्।। - वा. का. सर्ग ९/ श्लोक ७

द्वादश सर्ग के प्रथम श्लोक में ही लिखा है- तत्पश्चात् बहुत दिन होने पर सुन्दर मनोहर वसन्त ऋतु के प्राप्त होने पर राजा का यज्ञ करने का मन हुआ। तदनन्तर उन देव सदृश तेजस्वी विप्र ऋष्यशृङ्ग को सिर से (नमस्कार आदि से) प्रसन्न करके उन्होंने यज्ञ और कुल की संतति के लिए वरण किया।

ततः काले बहुतिथे कस्मिंश्चित् सुमनोहरे।
वसन्ते समनुप्राप्ते राज्ञो यष्टुं मनोऽभवत्।। - वा. का. सर्ग १२/ श्लोक १
ततः प्रसाद्य शिरसा तं विप्रं देववर्णिनम्।
यज्ञार्थं वरयामास संतानार्थं कुलस्य च।। - वा. का. सर्ग १२/ श्लोक २

इसी सर्ग के श्लोक १७-१८ में दो विशेष बात कहीं हैं। क्योंकि यज्ञ मनुष्य तो क्या सम्पूर्ण सृष्टि के कल्याण के लिए होता है। अन्य प्राणियों के अलावा जड़ सृष्टि को भी त्राण देने वाला होता है। अतः यज्ञ विधि में कोई ऐसी प्रक्रिया सम्मिलित नहीं हो सकती जो किसी को कष्ट दे इसीलिए सत्रहवें श्लोक में कामना की गई कि 'इस यज्ञ में कोई कष्ट देने वाला अपराध न हो।'

शक्यः कर्तु मयं यज्ञः सर्वेणापि महीक्षिता।
नापराधो भवेत् कष्टो यद्यस्मिन् क्रतुसत्तमे। - वा. का. सर्ग १२/ श्लोक १७

इसी प्रकार यज्ञ का सम्पादन निश्चित विधि के अनुसार किया जाता है जिसमें सामग्री इत्यादि का भी निश्चित अनुपात होता है और समिधाएँ व सामग्री के घटक भी निश्चित होते हैं। इसलिए विधि सहित या विधि के अनुकूल किए जाने वाला यज्ञ ही मनोवांछित लाभ प्रदान करता है। अतः श्लोक १८ में इस ओर से सचेत करते हुए कह दिया कि नष्ट हुए (विधि रहित) यज्ञ का कर्त्ता शीघ्र नाश को प्राप्त होता है।

छिद्रं हि मृगयन्तेऽत्र विद्वांसो ब्रह्मराक्षसाः।
विघ्नितस्य हि यज्ञस्य सद्यः कर्ता विनश्यति।। - वा. का. सर्ग १२/ श्लोक १८

१९वें सर्ग में विश्वामित्र ऋषि का प्रकरण आता है जो कि दशरथ के राज दरबार में अपने यज्ञ की रक्षा के लिए श्री राम को लेने के लिए आते हैं। यहाँ भी बड़ा ही स्पष्ट है कि राम को माँगा भी यज्ञ की रक्षा के लिए है और आगे वर्णन मिलता है कि जब राम विश्वामित्र जी के साथ गए तो यज्ञ की रक्षा का कार्य ही उन्होंने सम्पादित किया। विश्वामित्र स्पष्ट कह रहे हैं कि मारीच और सुबाहु नाम के दो बलवान राक्षस यज्ञ में विघ्न करते हैं।

तेन संचोदितौ द्वौ तु राक्षसौ सुमहाबलौ।
मारीचश्च सुबाहुश्च यज्ञविघ्नं करिष्यतः।।
- वा. का. सर्ग २०/ श्लोक १६

दशरथ को बहुत लम्बे काल का बिछोह अनुभव न हो इसलिए सर्ग १९ श्लोक १८ में कहते हैं कि यज्ञ का केवल १० रात का काल ही कमल के समान नेत्र वाले राम की (अपेक्षा रखता है)।

दशरात्रं हि यज्ञस्य रामं राजीवलोचनम्।
नात्येति कालो यज्ञस्य यथायं मम राघव।। - वा. का. सर्ग १९/ श्लोक १८

यहाँ एक विचित्र बात होती है कि पुत्र मोह प्रबल हो जाता है और दशरथ अभी-अभी जो यह प्रतिज्ञा करके हटे थे कि-'हे ऋषि विश्वामित्र! आप जो कहेंगे वैसा ही मैं करूँगा।' वे असमंजस में पड़ जाते हैं और राम को विश्वामित्र के साथ भेजने में टालमटोल करते हैं। इस पर यज्ञ की महिमा को प्रतिष्ठित करते हुए २१ वें सर्ग में श्लोक ८ में विश्वामित्र दशरथ से कहते हैं कि 'हे राघव करूँगा, ऐसी प्रतिज्ञा करके न करने वाले पुरुष के इष्ट= यागादि कर्म और पूर्त= कूप आदि निर्माण कर्म का नाश हो जाता है। इससे ज्ञात होता है कि तत्कालीन समय में यज्ञ का सर्वोपरि स्थान था।

संश्रुत्यैवं करिष्यामीत्यकुर्वाणस्य राघव।
इष्टापूर्तवधो भूयात्तस्माद्रामं विसर्जय।। - वा. का. सर्ग २१/ श्लोक ८

अनेक बार जिन उपमाओं का प्रयोग किसी प्रकरण में किया जाता है उससे भी तत्कालीन समाज की प्रमुखताओं के बारे में ज्ञात होता है। अति प्रसिद्ध की ही उपमा दी जाती है यह सर्वज्ञात है। २१वें सर्ग में भी ऐसा प्रसंग आता है। राम को अपने साथ यज्ञ के रक्षार्थ भेजने में आनाकानी करने के कारण विश्वामित्र को दशरथ पर क्रोध आ जाता है। वाल्मीकि इस क्रोध की यज्ञाग्नि से तुलना करते हुए लिखते हैं- 'जैसे यज्ञ में अच्छे प्रकार से हुत और घृत से सींचा हुआ अग्नि प्रदीप्त होता है, वैसे ही महर्षि रूपी वह्नि अत्यन्त प्रदीप्त हुयी अर्थात् वे क्रुद्ध हुए।

इति नरपतिजल्पनाद् द्विजेन्द्रं कुशिकसुतं सुमहान् विवेश मन्युः।
सुहुत इव मखेऽग्निराज्यसिक्तः समभवदुज्ज्वलितो महर्षिवह्निः।। - वा. का. सर्ग २०/ श्लोक २७

२३वें सर्ग में प्रकरण आता है कि वशिष्ठ इत्यादि के समझाने पर अन्ततोगत्वा दशरथ विश्वामित्र जी के यज्ञ की रक्षार्थ श्रीराम को उनके साथ भेज देते हैं और श्री लक्ष्मण उनके अनुवर्ती हो उनके साथ जाते हैं। रास्ते में सरयू नदी के तट पर बहुत सारे ऋषियों के आश्रमों को देखते हैं और हर आश्रम के बारे में महर्षि विश्वामित्र से जानकारी प्राप्त करते हैं। (जैसा हमने कहा था कि साहित्य में अनेक संकेत तत्कालीन इतिहास को भी प्रदर्शित करते हैं, तदनुरूप यहाँ स्पष्ट रूप से कहा गया है कि अयोध्या से निकलकर विश्वामित्र, श्रीराम एवं लक्ष्मण सरयू नदी के तट पर पहुँचते हैं। आज जो लोग अयोध्या और श्री राम के अस्तित्व पर सन्देह उठाते हैं उन्हें कम से कम एक बार वाल्मीकि रामायण का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए।)

यात्राकाल में भी दैनिन्दिन कर्मों का त्याग नहीं किया जाता था। जैसाकि आजकल हम देखते हैं कि यात्राओं में इस तरह के सभी पवित्र कार्य प्रायः लोग स्थगित कर देते हैं। परन्तु ऋषि विश्वामित्र, श्रीराम, लक्ष्मण यात्रा काल में भी यह ध्यान रखते हैं कि दैनिन्दिन नित्य कर्मों का सम्पादन अवश्य हो।

कौसल्या सुप्रजा राम पूर्वा संध्या प्रवर्तते।
उत्तिष्ठ नरशार्दूल कर्तव्यं दैवमाह्निकम्॥ — वा. का. सर्ग २३/ श्लोक २
तस्येर्षेः परमोदारं वचः श्रुत्वा नृपात्मजौ।
स्नात्वा कृतोदकौ वीरौ जेपतुः परमं जपम्॥ — वा. का. सर्ग २३/ श्लोक ३

हे कौशल्या के सुपुत्र राम! प्रातः संध्या हो रही है। हे नरश्रेष्ठ उठो, देव-सम्बन्धी दैनिक कर्म करो। उस ऋषि के परम उदार वचन को सुनकर दोनों वीर राजपुत्रों ने स्नान और आचमन करके परम जप (गायत्री) का जप किया।

पुनश्च १७ वें श्लोक में कहते हैं- हे नरोत्तम! स्नान जप और अग्निहोत्र करके, शुद्ध हुए हम पुण्य आश्रम में चलते हैं।

अभिगच्छामहे सर्वे शुचयः पुण्यमाश्रमम्।
स्नाताश्च कृतजप्याश्च हुतहव्या नरोत्तम॥

यहाँ यह भी ध्यातव्य है कि उक्त दोनों श्लोकों में राम को नर श्रेष्ठ तथा नरोत्तम कहके ही सम्बोधित किया है। **क्रमशः.......**

- अशोक आर्य
चलभाष- +919314235101, +918005808485

शोक संवेदना

महाशोक

प्रसिद्ध आर्यनेता माननीय श्री राम सिंह जी आर्य आर्य जगत् की निधि थे। उन्होंने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली एवं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के विभिन्न पदों को सुशोभित किया। वे ओजस्वी वक्ता होने के साथ-साथ कुशल संगठक भी रहे। आर्य समाज की प्रगति में उनका अतुलनीय योगदान रहा। उनके इस प्रकार के चले जाने से उनके परिवार की ही नहीं वरन् सम्पूर्ण आर्य जगत् की भी अपूरणीय क्षति हुई है। मेरे साथ आदरणीय श्री रामसिंह जी का विशेष सम्बन्ध था। न्यास के कार्य को लेकर वे सदैव सकारात्मक रहते थे। उनका विछोह हमें सदा खलता रहेगा। इस दुख की घड़ी में श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के सभी न्यासी बन्धु एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार के सभी सदस्यगण सहभागी हैं। हम हार्दिक संवेदना प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा के श्री चरणों में विनय करते हैं कि वह दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें और परिवारीजनों को वह शक्ति प्रदान करें कि वे इस दारुण दुख को सहन कर सकें। इन्हीं भावनाओं के साथ आदरणीय राम सिंह जी आर्य के प्रति श्रद्धांजलि प्रकट करते हैं।

— अशोक आर्य, उदयपुर

भजनों का एक युग समाप्त हुआ

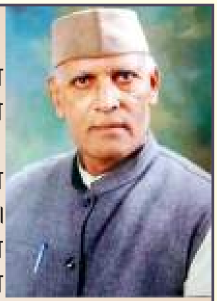

आर्य जगत् के सुयोग्य भजनोपदेशक सैद्धान्तिक गीतों के सिद्धहस्त लेखक धर्माचार्य सरल स्वभाव के धनी पंडित सत्यपाल जी पथिक के देहावसान का समाचार सुनकर हार्दिक दुख हुआ। २२ अक्टूबर को कोरोना ने पंडित जी को हमसे सदा-सदा के लिए दूर कर दिया। पथिक जी ने कितने सुन्दर गीतों की रचना की यह आप सभी भली-भाँति जानते हैं। आज जब उनकी याद आती है तो हृदय भावुक हो जाता है। अपने सुपुत्र श्री दिनेश जी को वे भजनोपदेशक के रूप में आर्य जगत् को समर्पित कर गए हैं।

श्रद्धेय सत्यपाल पथिक जी का पंचतत्व में विलीन होना सचमुच दुखदाई है। आर्य जगत् का यह ऐसा अनमोल हीरा था जिसकी क्षतिपूर्ति कभी नहीं हो सकती। इनके लिखे भजन ऐसे मोती हैं जो कितने ही कंठों ने गाए हैं और युगों-युगों तक गाए जाएँगे।

ये वो पीढ़ी थी जिन्हें कभी प्रचार हेतु सुविधापूर्ण परिस्थितियाँ प्राप्त नहीं हुईं, परन्तु दयानन्द के इन दीवानों ने अपने सुख की कभी परवाह नहीं की, इसी कारण वे आर्यसमाज के प्रचार युग के प्रस्तोता बन सके। आज ऐसे रत्न कहाँ हैं? यह क्षति अपूरणीय है।

इस दुख की घड़ी में श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के सभी न्यासी बन्धु एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार के सभी सदस्यगण हार्दिक संवेदना प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा के श्री चरणों में विनय करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें।

— भवानीदास आर्य, उदयपुर

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वि-जन्मशताब्दी लेखमाला

(फरवरी–2024 तक प्रतिमाह एक लेख)

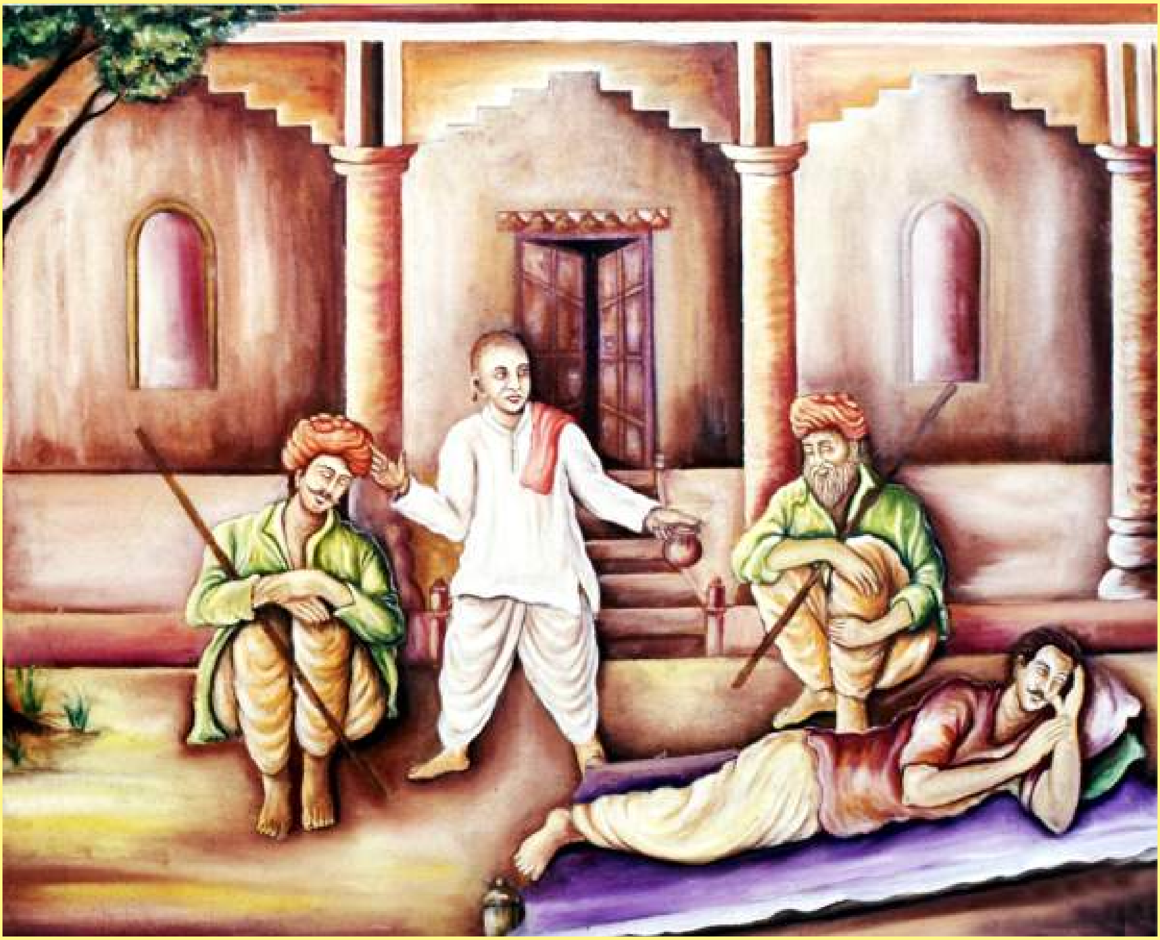

यद्यपि पिता को शान्त करने के लिए शुद्ध चैतन्य ने क्षमा माँग ली थी परन्तु शुद्ध चैतन्य अपने निश्चय से डिगे बिल्कुल नहीं थे। पिता ने उनके ऊपर जो पहरा बिठाया था उसके चलते कब अवसर मिले और कब वे मुक्त हों इसी अवसर की वे प्रतीक्षा करते रहे। तीसरी रात्रि में जब पहरेदार सो गए तो मूलशंकर तुरन्त हाथ में एक जलपात्र लेकर निकल पड़े जिससे कि अगर किसी कारणवश पकड़े जावें तो शौच जा रहा था ऐसा बहाना बना सकें। यहाँ से निकलने के पश्चात् पुत्र का पिता से कभी पुनर्मिलन नहीं हो सका।

पाठक सोच रहे होंगे कि हमने समाज में नारी के स्थान के बारे में चर्चा करने हेतु धर्म अथवा मजहब की चर्चा करना क्यों उचित समझा है और दूसरे यह कि क्या धर्म और मजहब पृथक्-पृथक् हैं? तो हमारा निवेदन है कि संसार में लगभग ९० प्रतिशत लोग किसी न किसी धर्म अथवा मजहब को मानते हैं। तथा उनके जीवन की धारा का संचालन भी उनके तथाकथित धर्मग्रन्थ के आधार पर ही होता है। धर्म तथा मजहब निःसंदेह पृथक् हैं। इनमें क्या अन्तर है? यह बड़ा लम्बा विषय है। हमारा मानना है कि धर्म तो मानव जीवन के केन्द्र में सुनिश्चित होना चाहिए, मजहब नहीं। इस मान्यता को स्पष्ट करने हेतु धर्म तथा मजहब का विशद् विश्लेषण करना पड़ेगा जो यहाँ सम्भव नहीं है पर

धर्म मजहब और नारी

गतांक से आगे ....

आगे किसी कड़ी में आयेगा अवश्य। तो आलेख के इस भाग में हम देखना चाहते हैं कि 'वेद' जो कि परमात्मा के द्वारा मनुष्यमात्र के लिए दिया ज्ञान है तथा बाइबिल जो कि ईसाइयों का और कुरआन जो कि मुस्लिम बन्धुओं का धर्म ग्रन्थ है उनमें नारी की स्थिति, अधिकार अथवा स्थान के बारे में क्या निर्देश प्राप्त होते हैं और इन सब के अनुयायियों में व्यवहार में महिलाओं की क्या स्थिति है। विवरण को अत्यन्त संक्षिप्त रखना ही पड़ेगा।

संसार में तीन बड़े धर्म (मजहब) हैं। विश्वभर में २.४० अरब जनसंख्या के साथ ईसाई प्रथम स्थान पर हैं, १.६० अरब जनसंख्या के साथ मुस्लिम दूसरे तथा १.१२ अरब होने से हिन्दू (आर्य) तीसरे स्थान पर हैं। इनके अतिरिक्त चीन के तथा अफ्रीका, जापान व अन्य भूभागों के पारम्परिक धर्मों को मानने वालों की संख्या १ अरब के आसपास बतायी जाती है। यहूदी केवल १.४ करोड़ ही हैं। इनमें तीन प्रमुख समुदाय तथा यहूदी सकर्तृक सृष्टि में विश्वास रखते हुए ईश्वर द्वारा प्रदत्त ज्ञान को स्वीकार करते हैं। यह आश्चर्य ही है कि यहूदी, ईसाई तथा मुस्लिम एक ही परम्परा को मानते हुए भी नबियों के आधार पर भिन्न राह पर चल पड़े और भिन्नता भी इतनी कि एक दूसरे की जान के दुश्मन बने हुए हैं। इस प्रकार तौरेत से बाइबिल पृथक् हो गयी तो इनसे पृथक् कुरआन। इनमें भी अनेक फिरके हो गए-क्यों-क्या आदि का वर्णन इस आलेख का विषय नहीं हो सकता अतः हम इतना ही कहना चाहते हैं जब ये तीनों अपने यहाँ महिलाओं की स्थिति किसी भी प्रकार के भेदभाव से रहित, अत्यन्त सम्मानित मानते हैं, तो इसका विश्लेषण करने से पूर्व हम उचित समझते हैं कि इन तीनों प्रमुख धर्मग्रंथों में नारी की स्थिति के बारे में क्या कहा है, यह देख लिया जाय। वेद, बाइबिल एवं कुरआन में महिलाओं की स्थिति देखने हेतु केवल सीमित उदाहरण ही दिए जा सकते हैं परन्तु हमें विश्वास है कि स्थालीपुलाक न्याय से यही वस्तुस्थिति को स्पष्ट कर पायेंगे।

भारतीय मनीषा में वेदों की सदैव सर्वोपरिता रही है इसमें कोई सन्देह है ही नहीं, यहाँ तक कि वेद के निर्देश सर्वोच्च प्रमाण के रूप में स्वीकार किये जाते हैं। जो लोग वेद को वह स्थान नहीं देते वे भी वेद को मानव सभ्यता की प्रथम पुस्तक तो मानते ही हैं।

ध्यातव्य यह है कि शिक्षा वह पहला सोपान है जिस पर चढ़कर ही स्त्री अपना गौरव प्राप्त कर सकती है। अतः इन धर्मग्रन्थों में नारी-शिक्षा के बारे में क्या कहा है, समाज में उसकी स्थिति का निर्धारक होगा।

वेदों में स्पष्ट रूप से महिलाओं के पढ़ने व उसके महत्त्व को उकेरित किया है। वेदों में सैकड़ों मन्त्र हैं जिनमें नारी को समाज में विभिन्न भूमिकाओं में सफलता के साथ गौरवमयी स्थान दिया गया है।

ऐसे ही कुछ वेदमंत्र हम यहाँ दे रहे हैं-

आपश्चिदस्मै पिन्वन्त पृथ्वीर्वृत्रेषु शूरा मंसन्त उग्राः।

– ऋग्वेद ७/३४/३

जो कन्याएँ जल के समान कोमलता आदि गुण वाली, पृथ्वी के समान क्षमाशालिनी और वीरों के समान उत्साही होकर विद्याओं को ग्रहण करती हैं वे सौभाग्यवती बनतीं हैं।

प्र शुक्रैतु देवी मनीषा अस्मत्सुतष्टो रथो न वाजी।

– ऋग्वेद ७/३४/१

सब कन्याएँ विदुषी स्त्रियों से ब्रह्मचर्यपूर्वक सब विद्याएँ पढ़ें।

इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद् दिवि।
वि गोभिरद्रिमैरयत्।। – ऋग्वेद १/७/३

निश्चय ही किसी पुरुष अथवा स्त्री का विद्या के ग्रहण करने में अनधिकार नहीं है।

सूयवसाद्भगवती हि भूया अथो वयं भगवन्तः स्याम।
अद्धि तृणमघ्न्ये विश्वदानीं पिब शुद्धमुदकमाचरन्ती।।

– ऋग्वेद १/१६४/४०

जब तक माताएँ वेद को जानने वाली न हों तब तक उनके सन्तान भी विद्यावान नहीं बनते।

देव्यो वम्र्यो भूतस्य प्रथमजा मखस्य वोऽद्य शिरो राध्यासं।
देवयजने पृथिव्याः। मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे।।

– यजुर्वेद ३७/४

हे मनुष्यों! जब तक स्त्रियाँ विदुषी नहीं बनती हैं तब तक उत्तम शिक्षा नहीं बढ़ती है।

हम देखते हैं कि संसार में पगड़ी को आन-बान और शान समझा जाता है, वेद में स्त्री को समाज में पगड़ी ही माना है देखें-

अदित्यै रास्नासीन्द्राण्याऽउष्णीषः।
पूषासि घर्माय दीष्व। – यजुर्वेद ३८/३

स्त्री वैद्यक शास्त्र अवश्य पढ़ें इसके निर्देश वेद में मिलते हैं-

तनूपा भिषजा सुतेऽश्विनोभा सरस्वती।
मध्वा रजाᳪसीन्द्रियमिन्द्राय पथिभिर्वहान्।। –यजुर्वेद २०/५६

यदि स्त्री पुरुष वैद्यक विद्या न जानें तो रोग से निवृत्ति और

स्वास्थ्य की रक्षा न कर सकें।

स्त्री भूगर्भ आदि विद्या को जानने वाली हो। देखें-

सरस्वति देवनिदो नि बर्हय प्रजां विश्वस्य बृसयस्य मायिनः।
उत क्षितिभ्योऽ वनीरविन्दो विषमेभ्यो अस्रवो वाजिनीवति।।

– ऋग्वेद ६/६१/३

आवश्यक है कि स्त्रियाँ अध्यापिका हों। देखें –

नू रोदसी अभिष्टुते वसिष्ठैर्ऋतावानो वरुणो मित्रो अग्नि।
यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कं यूयं पात स्वस्तिभि सदा नः।

– ऋग्वेद ७/४०/७

भूमि के समान क्षमायुक्त, लक्ष्मी के सामान शोभायुक्त, जल के सामान शान्त और सहेली के समान उपकार करने वाली विदुषी अध्यापिकाएँ हों, वे सब कन्याओं को अध्यापन के द्वारा और सब स्त्रियों को उपदेश के द्वारा आनन्दित करें।

वेद सेना में भी स्त्रियों को पुरुष के समान स्थान देता है। जबकि इस क्षेत्र में महिलाओं का प्रवेश आज के समय में भी काफी कम है। 'स्त्रियाँ युद्ध में भी पतियों के साथ रहें'। देखें-

पितेवैधि सूनवऽआ सूशेवा स्वावेशा तन्वा।
संविशस्वाश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा।। – यजुर्वेद १४/३

संसार में व्यभिचार और भ्रष्टाचार का मुख्य कारण है कि यहाँ अपूज्यों की पूजा और पूज्यों का तिरस्कार किया जाता है। मायावी लोग नाना प्रकार के ढोंग रचकर विशेषकर स्त्रियों को प्रभावित कर लेते हैं। अतः किसी भी व्यक्ति का अनुसरण करने से पूर्व उसकी सच्चाई जानना आवश्यक है। यह कार्य महिलाओं को ही करना चाहिए ताकि वे उनके कपट जाल से बच सकें-

इसलिए ऋग्वेद में कहा है-

उत त्वा स्त्री शशीयसी पुंसो भवति वस्यसी।
अदेवत्रादराधसः।। – ऋग्वेद ५/६१/६

भावार्थ यह है कि माननीया स्त्रिया अपूज्यों की पूजा से पृथक् रहती हैं। ऋग्वेद के निम्न मंत्र में भी यही कहा कि-

अमाजूरिव पित्रोः सचा सती समानादा सदसस्त्वामिये भगम्।
कृधि प्रकेतमुप मास्या भर दद्धि भागं तन्वो येन मामहः।।

– ऋग्वेद २/१७/७

स्त्रियाँ गृहस्थ में प्रवेश कर पूज्यों का सत्कार और अपूज्यों का तिरस्कार कर ऐश्वर्य बढ़ावें।

स्पष्ट है कि भारतीय मनीषा ने नारी के साथ कभी भेदभाव नहीं किया। वह समाज में आदर्शों की ध्वजवाहक रही है- निम्न मन्त्र में तो नारी को गृह की और प्रकारान्तर से मानो समाज की धुरी बता दिया है। वह अपने गुणों के कारण गर्वपूर्वक घोषणा कर सकती है कि पति भी उसका अनुसरण करता है। ऋग्वेद के निम्न मन्त्र का अवलोकन करें।

अहं केतुरहं मूर्धाहमुग्रा विवाचनी।
ममेदनु क्रतुं पतिः सेहानाया उपाचरेत्।। – ऋग्वेद १०/१५९/२

मैं घर में गृहज्ञान को चेताने वाली हूँ, मैं परिवार में मूर्धा के सामान मान्य हूँ, मैं तेजस्वी तथा विशिष्ट मधुरभाषिणी हूँ, मुझ सहनशीला के ही संकल्प के अनुसार पति व्यवहार करता है।

कुरान और नारी

इन कतिपय वेदमंत्रों के पश्चात् मुस्लिम बन्धुओं के द्वारा मान्य ईश्वरीय पुस्तक कुरआन से केवल दो आयतें उद्धृत कर रहे हैं।

पुरुष स्त्रियों के सिरधरे हैं इसलिए अल्लाह ने एक को दूसरे पर बड़ाई दी है। और इसलिए भी कि उन्होंने (पुरुषों ने) अपने माल (उनपर) खर्च किये हैं। सो जो नेक स्त्रियाँ होतीं हैं वे अदब से रहने वाली होतीं हैं और (पुरुषों के) पीठ पीछे अल्लाह की हिफाजत में (उनके हक की) रक्षा करतीं हैं। और जो स्त्रियाँ ऐसीं हों जिनकी सरकशी का तुम्हें डर हो, उन्हें समझाओ, सोने की जगह में उनसे अलग रहो, और उन्हें मारो..............।। – कुरआन सूरः ४ आयत ३४

यहाँ तीन बातें प्रमुख हैं

१. पुरुषों को स्त्रियों पर प्रभुता स्वयं परमेश्वर ने दी है (इसलिए अपरिवर्तनीय है) और उसका कारण यह भी है कि स्त्रियों पर पुरुष अपना धन खर्च करते हैं। यहाँ परमेश्वर ने यह विचार नहीं किया कि क्या कभी ऐसी स्थिति भी आ सकती है कि औरत माल कमाए और पुरुष पर खर्च करे। हमारा विचार है कि स्वयं मुहम्मद साहब के मामले में ऐसा ही था, उनकी पत्नी खदीजा बेगम स्वयं धनाढ्य व्यापारी महिला थीं।

दूसरी बात यह है कि किसी स्त्री के सरकश होने का यदि डर हो तो उसे सजा दी जावे। यहाँ सरकशी का डर होना पर्याप्त माना गया है, वास्तव में सरकशी का होना अनिवार्य नहीं है। अर्थात् प्रकट में स्त्री का उद्दण्ड या विद्रोही होना जो कि सबको दिख सके आवश्यक नहीं है, बस पति को उसकी उदण्डता अथवा विद्रोह की आशंका मात्र होने से उसे दण्ड का अधिकार दे दिया गया है।

प्रथम दण्ड 'समझाना' लिखा है, कहीं-कहीं चेतावनी शब्द का प्रयोग है। दूसरा दण्ड उसे दाम्पत्य अधिकार से वंचित कर देना है। यहाँ यह भी कहा जा सकता है कि पति भी तो यहाँ वंचित हो गया, तो यह न भूलें उसकी अन्य पत्नियाँ भी हैं। बहुपत्नियों के चलते स्वयं मुहम्मद साहब के जीवन में ऐसी समस्याएँ उत्पन्न होती रहतीं थीं और उन्हें दूर करने हेतु आयतें भी उतरती रहती थीं।

तीसरा दण्ड उन्हें मारना है। स्पष्ट है ये तीनों अधिकार पति को स्वयं ईश्वर की ओर से दिए हैं अतः अपरिवर्तनीय हैं।

आज के प्रगतिशील वातावरण में अच्छी बात यह है कि इस पर मुस्लिम विद्वान् व प्रबुद्धजन विचार करने लगे हैं तथा पैगम्बर साहब के जीवन के उदाहरण देकर इस्लाम को घरेलू हिंसा के विरुद्ध मानते हैं। हमने उक्त आयत के ७ अंग्रेजी अनुवाद तथा ३ हिन्दी अनुवाद देखे हैं। 'मारने' की आज्ञा का सही से कोई निवारण नहीं कर पाया है। किसी ने कोड़े लगाने की बात कही है तो किसी ने केवल दांतुन से मारने की बात कही है। जाकिर नायक ने इसे प्रतीकात्मक सजा बताया, जो कि रुमाल से मारकर दी जा सकती है। क्या आज के नारीवादी इस व्याख्या से संतुष्ट हैं? इस्लामिक देशों में इस मारने को जायज भी बताया है।

Article 53 of the United Arab Emirates' penal code acknowledges the right of a "chastisement by a husband to his wife and the chastisement of minor children" so long as the assault does not exceed the limits prescribed by Shari'a. (Sourse-Wikipedia)

उक्त आयत कुरआन की है यह परेशानी का सबब है।

जिसका हल मुस्लिम विद्वान् निकाल नहीं पा रहे हैं। पाकिस्तान से एक उदाहरण देना समीचीन होगा-

The Council of Islamic Ideology, a constitutional body of Pakistan that advises the government on the compatibility of laws with Islam, has recommended authorizing husbands to 'lightly' beat disobedient wives.[59] When asked why is beating a wife lightly permitted? The chairman of Pakistan's Council of Islamic Ideology, Mullah Maulana Sheerani said, "The recommendations are according to the Quran and Sunnah . You can not ask someone to reconsider the Quran".[60](Source-Wikipedia)

दूसरा उदाहरण कुरआन सूरः २ आयत २२३ है-

तुम्हारी स्त्रियाँ तुम्हारी खेती हैं सो अपनी खेती में जिस तरह से चाहो जाओ............

इसकी आज्ञा स्पष्ट है व्याख्या की आवश्यकता नहीं उस पर भी इसे पूर्व की आयत के साथ पढ़ने पर प्रकरण भी स्पष्ट हो जाता है जिसका एक ही अर्थ निकलता है जिसे यहाँ लिखना शोभनीय नहीं है।

इन दोनों आयतों से इस्लाम में नारी के बारे में ईश्वरीय आदेश क्या है सो स्पष्ट होता है। यदि अभी भी सन्देह हो तो तीन तलाक, बहु विवाह, मुता विवाह, हलाला आदि की व्यवस्थाएँ और स्पष्ट कर देंगी।

मुस्लिम मत में हदीस को भी मानना अनिवार्य है। हदीस वह आचरण अथवा कथन हैं जो पैगम्बर मुहम्मद साहब ने कहे अथवा आचरित किये थे।

एक हदीस के अनुसार अधिकांश औरतें जहन्नुम में जायेंगी। सही बुखारी सर्वमान्य मानी जाती है। इसके पृष्ठ ४१८ पर लिखा है- '१५२०- हजरत उसामा रजि. कहते हैं कि हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मैं जन्नत के दरवाजे पर खड़ा हुआ तो मैंने जन्नत में दाखिल होने वाले अक्सर लोग मिसकीन ही देखे और दोजख के दरवाजे पर जब खड़ा हुआ तो वहाँ भी अक्सर दाखिल होने वाली औरतें देखीं।

अर्थ यह है कि औरतों का अन्तिम ठिकाना दोजख ही है।

एक अन्य हदीस का भी यही आशय है- Vol 1, Book 6, Number 301: (Narrated Abu Said Al-Khudri:)

Once Allah's Messenger (ﷺ) went out to the Musalla (to offer the prayer) of `Id-al-Adha or Al-Fitr prayer. Then he passed by the women and said, "O women! Give alms, as I have seen that the majority of the dwellers of Hell-fire were you (women)."

They asked, "Why is it so, O Allah's Messenger (ﷺ) ?"

He replied, "You curse frequently and are ungrateful to your husbands. **I have not seen anyone more deficient in intelligence and religion than you.** A cautious sensible man could be led astray by some of you." The women asked, "O Allah's Messenger (ﷺ)! What is deficient in our intelligence and religion?"

He said, "Is not the evidence of two women equal to the witness of one man?" They replied in the affirmative. He said, "This is the deficiency in her intelligence.

Isn't it true that a woman can neither pray nor fast during her menses?" The women replied in the affirmative. He said, "This is the deficiency in her religion."

यहाँ स्पष्ट किया है कि औरत नरक में क्यों? इसका क्या कारण है? क्योंकि वे अपने पतियों को अक्सर कोसती हैं एहसान फरामोश रहती हैं। दो औरतों की गवाही एक पुरुष के बराबर मानी जाती है क्योंकि बुद्धि में वे कमतर हैं। वह अपने मासिक धर्म के दौरान न तो प्रार्थना कर सकतीं है और न उपवास रख सकतीं हैं यह धर्म में उनकी कमी है।

हम समझते हैं कि इस्लाम में नारी की स्थिति समझने हेतु इतना पर्याप्त है।

बाइबिल और नारी

जैसा कुरआन में पुरुष को स्त्री का सिरधरा बताया है उसी प्रकार बाइबिल के ईश्वर ने भी पुरुष को नारी के ऊपर

प्रभुता प्रदान की है।
प्रथम तो ईश्वर ने सभी प्राणियों के जोड़े बनाए परन्तु मनुष्य में केवल नर अर्थात् आदम को उत्पन्न किया। फिर ईश्वर को लगा कि आदम का भी मादा साथी बनाना चाहिए तो उसने आदम को गहरी नींद में सुलाकर उसकी एक पसली निकाल कर उससे नारी को बनाया। इस प्रकार नारी का निर्माण ही पुरुष कि पसली से हुआ तो वह दोयम तो वैसे ही हो गयी। उस पर भी ज्ञान के फल खाने में आदम से अधिक दोष परमेश्वर ने हव्वा (ईव) का ही माना कि उसने आदम को निषिद्ध मार्ग पर चलाया। अतः उसे निम्न प्रकार सजा सुनायी, जो केवल ईव को नहीं भुगतनी पड़ी वरन् आज तक भी हर महिला बिना अपराध के भुगत रही है और क्या आश्चर्य है जो इस मत को मान्य नहीं करते उन महिलाओं को भी कष्टकारी प्रसव सहन करना पड़ रहा है।
उत्पत्ति पर्व की आयत संख्या ३.१६ दृष्टव्य है-
फिर स्त्री से उसने कहा, मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दुःख को बहुत बढ़ाऊँगा तू पीड़ित होकर बालक उत्पन्न करेगी और तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा। (उत्पत्ति ३.१६)
बाइबिल को भी ईश्वरीय पुस्तक बताया जाता है। पर नारी का चरित्र चित्रण यहाँ भी प्रशस्त नहीं मिलता।
Tertullian लैटिन क्रिश्चिएनिटी का पिता माना जाता है। पश्चिमी धर्मशास्त्र का सर्वोच्च ज्ञाता माना जाता है। वह लिखता है-
"You [woman] are the devil's gateway: you are the unsealer of that (forbidden) tree: you are the first deserter of the divine law: you are she who persuaded him whom the devil was not valiant enough to attack. You destroyed so easily God's image, man. On account of your desert- that is, death- even the Son of God had to die." अस्तु।

धन के बदले अस्मत का सौदा तथा मर्यादाओं का तार-तार होना बाईबिल में अनेक स्थलों पर दृष्टिगोचर होता है। निम्न अवतरण देखें, जहाँ बेटियों के विक्रय का विधान है।
If a man sells his daughter as a servant, she is not to go free as male servants do. Exodus 21:7

एक अन्य प्रकरण आता है-
'जब यहूदा ने उसको देखा, उसने उसको वेश्या समझा क्योंकि वह अपना मुँह ढ़ापे हुए थी। (उत्पत्ति ३८.१५)
और वह मार्ग से उसकी ओर फिरा और उससे कहने लगा, मुझे अपने पास आने दे, और वह कहने लगी, कि यदि मैं तुझे अपने पास आने दूँ, तो तू मुझे क्या देगा? (उत्पत्ति ३८.१६)
उसने कहा, मैं अपनी बकरियों में से बकरी का एक बच्चा तेरे पास भेज दूँगा। (स्पष्टतः एक स्त्री के सतीत्व की कीमत इस ईश्वरीय पुस्तक में एक बकरी का बच्चा माना है)।
तब उसने कहा, भला उसके भेजने तक क्या तू हमारे पास कुछ रेहन रख जाएगा? (उत्पत्ति ३८.१७)
उसने पूछा, मैं तेरे पास क्या रेहन रख जाऊँ? उसने कहा, अपनी मुहर, और बाजूबन्द, और अपने हाथ की छड़ी। तब उसने उसको वे वस्तुएँ दे दीं, और उसके पास गया, और वह उससे गर्भवती हुई। (उत्पत्ति ३८.१८)
कुल मिलाकर अनेक स्थल ऐसे हैं जहाँ महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार रेखांकित हैं। रखैल एवं लौंडी (दासी) को मान्यता दी गयी है। आदि-आदि।

महिलाओं के कैथोलिक चर्च में पादरी बनने पर रोक-

चर्च में महिलाओं को विशिष्ट स्थान नहीं मिल सकता यह निम्न उदाहरण से स्पष्ट है-
'रोमन कैथोलिक चर्च में महिलाओं के पादरी बनने का मुद्दा एक बार फिर चर्चा में आ गया है। पोप फ्रांसिस के मुताबिक उनका मानना है कि महिलाओं के पादरी बनने पर रोक हमेशा के लिए है। उधर, महिलाओं के लिए इस अधिकार की माँग करने वाले समूह विमन्स आर्डिनेशन कान्फ्रेंस (डब्ल्यूओसी) ने पोप के इस बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि पुरुषों की सत्ता हमेशा नहीं चलेगी। पोप फ्रांसिस ने यह बात मंगलवार को स्वीडन से रोम लौटते समय कही। एक महिला पत्रकार के प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि पोप सेंट जान पाल द्वितीय इस बारे में बहुत स्पष्ट शब्दों में कह चुके हैं और वह बात कायम है। वे पोप जान पाल द्वितीय के १९९४ के एक दस्तावेज का हवाला दे रहे थे, जिसमें महिलाओं के कैथोलिक चर्च में पादरी बनने पर रोक लगा दी गई थी।
यहाँ विभिन्न धर्म समूहों में, उनके निर्देशक ग्रन्थों में नारी के बारे में क्या कुछ कहा है उसकी एक संक्षिप्त झलक हमने यहाँ प्रस्तुत की है।
उपरोक्त संक्षिप्त वर्णन काफी कुछ कहने में समर्थ है। क्रमशः...

- अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष-न्यास
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

धर्म की आत्मा और शरीर

ज्ञान को धर्म की आत्मा माना जाए तो कर्म उसका शरीर होगा। आत्मा और शरीर के स्वरूप और सम्बन्ध पर विचार करें तो कहा जायेगा कि आत्मा के बिना शरीर का कोई अस्तित्व ही नहीं। उधर शरीर के बिना आत्मा अनभिव्यक्त रहता है, अर्थात् शरीर के माध्यम से ही आत्मा अभिव्यक्ति पाता है या अभिव्यक्त होता है। प्रकृत में भी ज्ञान और कर्म एक-दूसरे के पूरक हैं। ज्ञान नहीं तो कर्म का कोई अस्तित्व ही नहीं तथा कर्म के बिना ज्ञान की अभिव्यक्ति नहीं। केवल आत्मा या केवल शरीर जैसे अधूरे रहते हैं या यों कहें कुछ भी फलप्रद नहीं होते, उसी प्रकार कोई व्यक्ति धर्म सम्बन्धी ऊँचे-से-ऊँचे ज्ञानार्जन में लगा रहे अथवा ज्ञान की उपेक्षा करके केवल कर्म करने में ही व्यस्त रहे तो धर्म का आधा हिस्सा ही पकड़ा हुआ माना जायेगा। इसलिए कोई व्यक्ति धर्म से सुख चाहता है तो ज्ञान और कर्म दोनों को साथ-साथ लेकर चलना होगा।

यहाँ ज्ञान से तात्पर्य है जगत् और जीवन के बीच सामन्जस्य या सन्तुलन स्थापित करने वाले उन नियमों की जानकारी, जिनकी परिणति जीवन में सुख के रूप में होती है। उन नियमों में से कुछ नियम तो ऐसे होते हैं जो दूसरों से सम्बन्ध रखते हैं तथा कुछ केवल अपने से ही। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, दान व दया का सम्बन्ध प्रायः दूसरों के साथ है। व्यक्ति यदि अकेला हो तो धर्म के इन रूपों की प्रायः कोई आवश्यकता ही नहीं रह जायेगी। मुख्यरूप से दूसरे व्यक्तियों के साथ सम्बन्ध में ही हिंसा-अहिंसा, सत्य-असत्य, चौर्य-अचौर्य, ब्रह्मचर्य-अब्रह्मचर्य, परिग्रह-अपरिग्रह, दान-अदान, दया व क्रूरता का अर्थ समझा जा सकता है। अर्थात् पारस्परिक सम्बन्ध में ही इन उपयुक्त विविध नियमों का स्वरूप पूर्णतः प्रकट हो सकता है। दूसरे शौच-सन्तोष-तप-स्वाध्याय-ईश्वरप्रणिधान, ये धर्म के इस प्रकार के रूप हैं जो प्रायः स्वयं व्यक्ति से सम्बन्ध रखते हैं। व्यक्ति केवल अकेला हो तो भी इनकी आवश्यकता है या इन शब्दों के द्वारा संकेतित अर्थ की प्रयोजनीयता है। पवित्रता, सन्तोष आदि के चरितार्थ होने के लिए सामाजिक पारस्परिकता की आवश्यकता नहीं है बल्कि ये तो व्यक्ति की निजी वस्तुएँ हैं। इन गुणों के परिप्रेक्ष्य में व्यक्ति को स्वयं के द्वारा स्वयं का मूल्यांकन करना होता है।

इसी प्रकार धैर्य-क्षमा-मनोनिग्रह-इन्द्रियसंयम, उत्तम विद्या या शिक्षा, अक्रोध आदि विशिष्ट गुण भी धर्म के स्वरूप को प्रकट करने वाले कहे जाते हैं। बुद्ध ने इन सभी नियमों को 'शील' इस शब्द से अभिहित किया है। सार रूप में कहें तो कहना होगा कि जीवन और जगत् (चाहे वैयक्तिक हो या सामाजिक) जिन नियमों के ऊपर टिका हुआ है, जिनके न होने से व्यक्ति का स्वरूप ही बिखर जाता है, सर्वथा विखण्डित हो जाता है, उन नियमों का नाम है 'धर्म'। हर वस्तु का अपना एक धर्म होता है। उसी के आधार पर उस वस्तु का टिकाव या ठहराव होता है। यदि वह धर्म न रहे तो वह वस्तु भी न रहेगी। जैसे अग्नि का धर्म है उष्णता, मधु का धर्म है मिठास, सूर्य का धर्म है ऊर्जादान। इसी प्रकार मनुष्य का भी एक धर्म है जिसको 'मनुष्यता' नाम से प्रकट किया जाता है। मनुष्यता में जिन-जिन अर्थों का सामवेश है वे हैं- धृति, क्षमा, इन्द्रियनिग्रह, मनोनिग्रह, सहयोग, शान्ति इत्यादि।

यह हुआ धर्म का ज्ञान पक्ष। इसे अब कर्म के रूप में प्रकट करना होता है। ज्ञान धर्म का बौद्धिक स्वरूप है तो कर्म होगा व्यावहारिक स्वरूप। कोई व्यक्ति धर्म की उत्तम से उत्तम व्याख्या कर दे, बुद्धि के द्वारा, अच्छी प्रकार समझ ले और दूसरों को भी समझा दे, पर यदि वह व्याख्या कर्म में नहीं उतर पा रही, कर्म के साथ सुसंवादी न होकर विसंवादी है, तो कहना होगा कि धर्म का शरीर प्रकट नहीं हो रहा या नहीं हो पा रहा। और शरीर के बिना आत्मा से क्या लाभ उठाया जा सकता है? कुछ नहीं। इस विषय पर थोड़ा भी ध्यान दें तो बहुत सरलता से समझ में आ जाता है कि शरीर के बिना आत्मा की स्थिति वैसी ही है जैसे विद्युत् तो है पर उसके प्रवाहित होने के लिए आगे कोई यन्त्र नहीं है- बल्ब, पंखा, कोई बड़ी मशीन इत्यादि। विद्युत् को चरितार्थ होने के लिए अवश्य ही कोई यन्त्र चाहिए। तद्वत् धर्म के स्वरूप का जो

बौद्धिक-पक्ष 'ज्ञान रूप' है उसे भी सफल होने के लिए कर्मरूपी ढाँचे की आवश्यकता है, जहाँ ज्ञानरूपी विद्युत् कर्मरूपी यन्त्र में प्रकट हो सके। धर्म के ज्ञान व कर्म के पारस्परिक सम्बन्ध को इस रूप में देख व समझकर यदि लाभ उठाया जाए तो ही धर्म हमें अपना सम्पूर्ण लाभ दे सकता है। वे लोग भी अधूरे ही रहते हैं जो कर्म करने में तो अन्धा-धुन्ध लगे रहते हैं, पर ज्ञान को कोई महत्त्व नहीं देते। उस अवस्था में उनके कर्म धर्म के विरुद्ध भी जाते रहते हैं। इसलिए उनको दुःखरूपी फल भोगना ही पड़ता है।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर

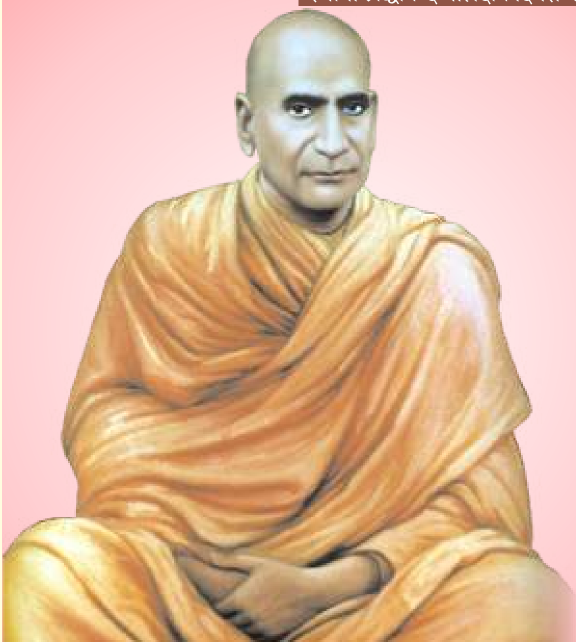

स्वामी श्रद्धानन्द

मेरा रंग दे बसन्ती चोला ....
यही रंग रंगाने श्रद्धानन्द, दिल्ली में आते हैं।।
आर्य जाति की खातिर, प्राणों की भेंट चढ़ाते हैं।
कातिल ने भी पीकर पानी, फिर पिस्तौल को खोला।।
मेरा रंग दे..........।।१।।
इसी चांदनी चौक के अन्दर, घण्टाघर था खड़ा हुआ।
घण्टाघर के नीचे लोगों! शेर बब्बर था अड़ा हुआ।
खोलो गन मशीनें खोलो, मैंने सीना खोला।।
मेरा रंग दे..........।।२।।
जामा मस्जिद के मिम्बर पर, श्रद्धानन्द जब आते हैं।
दयानन्द की जै के नारों, से आकाश गुंजाते हैं।
मस्जिद में छा गया सन्नाटा, वेद मंत्र जब बोला।।
मेरा रंग दे..........।।३।।
जलियांवाले बाग के अन्दर, कौन मोरचे पर आया।
कांग्रेस का अध्यक्ष बना, और हिन्दी को ही अपनाया।
अली ब्रदर और गांधी के, आगे वह न डोला।।
मेरा रंग दे..........।।४।।
गंगा और यमुना की धरती, इनको तनिक न भाती है।
अरब की रेत और ऊँट की बोली, इनको खूब सुहाती है।
इसी वास्ते गाते-फिरते, बुला मदीने मौला।।
मेरा रंग दे..........।।५।।
तुम्हें सौगन्ध है उनके लहू की, आर्यो! धर्म निभाओ तुम।
आपस के मतभेद को त्यागो, और एक हो जाओ तुम।
आर्य समाज 'आशानन्द' कहता, है यह शहीदी टोला।।
मेरा रंग दे..........।।६।।

साभार- विश्व कल्याण दिव्य भजनावली

पुण्य नहीं परम कर्त्तव्य है माता-पिता की सेवा करना

एक पोस्ट पढ़ रहा था - किसी ने पुण्य कमाए और किसी ने उपवास रखा, हमने पुण्य नहीं कमाए बस माँ-बाप को अपने साथ रखा। इससे स्पष्ट होता है कि माँ-बाप को अपने साथ या पास रखना व उनकी सेवा करना पुण्य का काम है। प्रायः अधिकांश लोग यही कहते हैं कि यदि हम पूजा-पाठ, व्रत-उपवास या तीर्थाटन न करके माँ-बाप की सेवा मात्र करें तो उसका बड़ा पुण्य हमें मिलता है। तो क्या हम पुण्य कमाने मात्र के लिए माँ-बाप की सेवा करते हैं? यदि माँ-बाप की सेवा करने से पुण्य न मिले तो क्या हम उनकी सेवा और देखभाल करना छोड़ देंगे? जब हम लाभ के लिए कोई कार्य करते हैं तो वो एक व्यापार जैसी क्रिया ही होती है। यदि हम पुण्य कमाने के उद्देश्य से माँ-बाप की सेवा करते हैं तो वो भी एक व्यापार मात्र ही माना जाना चाहिए और लाभ अथवा पुण्य-प्राप्ति के उद्देश्य को लेकर की गई सेवा के लिए हम गर्व नहीं कर सकते। एक दृष्टान्त याद आ रहा है।

दो व्यक्ति आपस में बातें कर रहे थे। एक व्यक्ति ने कहा- भाई मेरा छोटा सा परिवार है। पत्नी और दो बच्चे हैं। माँ-बाप भी हमारे साथ ही रहते हैं। दूसरे ने कहा- भाई मेरा भी छोटा सा परिवार है। पत्नी और दो बच्चे हैं। माता-पिता भी हैं और हम उनके साथ ही रहते हैं। दोनों व्यक्तियों की बातों का समान अर्थ है लेकिन उनके भावों में रात-दिन का अन्तर है। जब हम ये कहते हैं कि हमारे माँ-बाप हमारे साथ रहते हैं अथवा हम उन्हें अपने साथ रखते हैं उनकी सेवा करते हैं तो ये वाक्य ही हमारे खोखलेपन व दम्भी चरित्र को उजागर करने के लिए पर्याप्त है। इसमें अहंकार का भाव साफ झलकता है। माँ-बाप अपने बच्चों को साथ रखते हैं अथवा बच्चे माँ-बाप को साथ रखते हैं? जिस दिन हमें ये आभास हो जाएगा कि हम अपने माता-पिता के साथ रहते हैं और माता-पिता को ये अनुभव होने लगेगा कि हम अपने बच्चों के साथ रहते हैं न कि बच्चे हमें रखे हुए हैं उसी दिन स्थितियाँ बदल जाएँगी।

हमें माता-पिता की सेवा के साथ-साथ अपनी सोच भी बदलनी चाहिए लेकिन जो लोग माँ-बाप की उपेक्षा करते हैं अथवा उन्हें कष्ट पहुँचाते हैं उनसे वे लोग कहीं अधिक

अच्छे हैं जो पुण्य कमाने के लोभ से ही सही माता-पिता का ध्यान तो रखते हैं। वास्तव में माता-पिता की देखभाल और सेवा-शुश्रूषा एक कर्त्तव्य है, एक उत्तरदायित्व है जिसका निर्वाह करना अनिवार्य है। ऐसा न करना केवल अनैतिकता ही नहीं अपराध भी है। जब हम अपने कर्त्तव्यों का भली-भाँति पालन करते हैं व अपने उत्तरदायित्वों का ठीक से निर्वहन करते हैं तभी एक अच्छे नागरिक अथवा एक नेक इंसान कहलाने के अधिकारी बनते हैं। हम सभी को ऐसा करना चाहिए।

यहाँ प्रश्न उठता है कि क्या भली-भाँति अपने कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए अथवा अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह करने के बदले में आत्मश्लाघा अथवा किसी की प्रशंसा अथवा प्रमाण-पत्र अपेक्षित है?

वास्तव में प्रशंसा उस कार्य की होनी चाहिए जिसमें अपने कर्त्तव्यों अथवा उत्तरदायित्वों से बढ़कर कोई कार्य किया जाए अथवा अपने-पराए की भावना से ऊपर उठकर समाज अथवा राष्ट्र के लिए निस्स्वार्थ व निष्काम भाव से कोई उपयोगी कार्य किया जाए। कई कार्य स्वाभाविक रूप से करने होते हैं। उनके लिए किसी भी प्रकार की गर्वोक्ति ठीक नहीं लगती। एक माँ अपने बच्चे को दूध पिलाती है जो सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य है। पर क्या अपने इस काम के लिए वो अपनी प्रशंसा करती फिरती है? बिलकुल नहीं। लेकिन यदि वो ऐसा करे तो शायद उसकी सबसे अधिक भत्सर्ना की जाए। श्रवण कुमार अपने माता-पिता को बहगी में बिठाकर तीर्थयात्रा पर ले गया। उसका ये विलक्षण कार्य प्रशंसनीय ही नहीं अनुकरणीय भी है। जिन लोगों को माता-पिता की सेवा करने का दम्भ है वे जरा विचार करके देखें कि क्या उन्होंने सचमुच ऐसा कुछ किया है जो सामान्य से अधिक अथवा विलक्षण हो।

माता-पिता अपने बच्चों की खुशियों के लिए क्या कुछ नहीं करते? खुद कष्ट सह लेते हैं पर बच्चों की अच्छी से अच्छी परवरिश करने का प्रयास करते हैं। क्या हमने भी कभी अपनी आवश्यकताओं का गला घोंटकर उनकी जरूरतों को पूरा करने का प्रयास किया है? क्या उनकी इच्छानुसार ही हम उनकी देखभाल कर रहे हैं? यदि हम ऐसा कर रहे हैं तभी हम अपने कर्त्तव्यों का ठीक से पालन कर रहे हैं।

माता-पिता बचपन में अपने छोटे बच्चों को जितना प्यार करते हैं यदि वृद्धावस्था में भी वे उनसे उतना ही प्यार नहीं कर पा रहे हैं तो इससे प्रमाणित हो जाता है कि उनकी देखभाल में कहीं न कहीं कोई कमी अथवा लापरवाही अवश्य है। हमें चाहिए कि हर हाल में माता-पिता का प्यार प्राप्त करें और ये दम्भ न करें कि हम माता-पिता की सेवा करते हैं और औरों से अधिक अच्छी तरह करते हैं।

हम औरों से अधिक अच्छी तरह अपने माता-पिता की सेवा करते हैं ये भी एक भ्रम से अधिक कुछ नहीं है। अभी लॉकडाउन में मजदूरों के पलायन से सम्बन्धित बहुत से दर्दनाक चित्र देखने में आए। उनमें एक चित्र ऐसा भी था जिसमें स्वयं एक कृषकाय बूढ़ा व्यक्ति अपनी पिचासी-नब्बे साल की माँ को अपने कंधों पर उठाए हुए जा रहा था और उसे हजार डेढ़ हजार किलोमीटर का सफर इसी हालत में पूरा करना था। हम क्या खाकर उस गरीब इंसान की सेवा का मुकाबला करेंगे? हम उससे प्रेरणा ले सकते हैं। हम और बेहतर करने का प्रयास कर सकते हैं। हमें करना भी चाहिए लेकिन माता-पिता की सेवा के रूप में हम कितना भी ज्यादा से ज्यादा क्यों न करें उसके लिए हमें फूलकर कुप्पा होने की आवश्यकता नहीं। वास्तव में हम अपने माता-पिता के लिए जो कर रहे होते हैं प्रायः वो उनकी परवरिश और त्याग के मुकाबले में कहीं भी नहीं ठहरता।

जब हम किसी से कोई ऋण लेते हैं तो उसको चुकाना और ब्याज समेत चुकाना हमारा दायित्व बनता है। यदि हम ब्याज समेत किसी का ऋण चुका देते हैं तो ये एक अच्छी बात है क्योंकि ये एक व्यावसायिक अनिवार्यता है जिसके अभाव में हम दोषी अथवा अपराधी ही ठहराए जाएँगे। माता-पिता की सेवा भी एक ऋण माना गया है। इस ऋण को चुकाने के लिए भी किसी प्रशंसा-पत्र की माँग करना अथवा अपनी पीठ ठोकना पूर्णतः गलत होगा। इस ऋण को चुकाने के सन्दर्भ में कई लोग ये दर्पोक्ति करते सुने जाते हैं कि पहले हमारे माँ-बाप ने हमारी परवरिश की अब हम उनकी परवरिश करेंगे, उनके माँ-बाप बनेंगे। माता-पिता की सेवा करके हम उनके माता-पिता बनने का अहंकार क्यों पालना चाहते हैं? क्या आज्ञाकारी व सेवाभावी पुत्र-पुत्री अथवा पुत्रवधु बनने में कम सम्मान की बात है?

सीताराम गुप्ता
ए. डी. १०६-सी, पीतमपुरा
दिल्ली- ११००३४

विश्व समुदाय द्वारा वेदों की उपेक्षा दुर्भाग्यपूर्ण है

वेद ईश्वर प्रदत्त सब सत्य विद्याओं का ज्ञान है जो सृष्टि की आदि में अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा को प्राप्त हुआ था। इस सृष्टि को सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान तथा सच्चिदानन्दस्वरूप आदि लक्षणों वाले परमात्मा ने ही बनाया है। उसी परमात्मा ने सभी वनस्पतियों व औषधियों सहित मनुष्य आदि समस्त प्राणियों को भी उत्पन्न किया है। मनुष्यों के शरीर व उनके मन व बुद्धि आदि को भी परमात्मा ही बनाता है। अतः बुद्धि के विषय ज्ञान को भी परमात्मा ही प्रदान करता है। यदि सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा वेदों का ज्ञान न देता तो संसार में ज्ञान का प्रकाश न होता। मनुष्यों में यह सामर्थ्य नहीं है कि वह परमात्मा से वेदों का ज्ञान प्राप्त किये बिना स्वयं किसी भाषा व ज्ञान का विस्तार कर सकें। ईश्वर न हो तो यह सृष्टि भी बन नहीं सकती थी और न ही इसमें मनुष्य आदि प्राणी जन्म ले सकते थे। अतः सभी मनुष्यों को इस सत्य रहस्य को समझना चाहिये और वेदों की उपेक्षा न कर वेदों का अध्ययन कर इसमें उपलब्ध ज्ञान को प्राप्त होकर इसका लाभ उठाना चाहिये।

महर्षि दयानन्द ने अपने समय में अपनी कुछ शंकाओं का उत्तर संसार के किसी मत, पन्थ व ग्रन्थ में न मिलने के कारण ही सत्य ज्ञान की खोज की थी। उन्हें यह ज्ञान चार वेदों एवं वैदिक साहित्य, जो ऋषियों द्वारा रचित है, उनमें प्राप्त हुआ था। आज भी वेद ही सब सत्य विद्याओं के ग्रन्थ होने के शीर्ष व उच्च आसन पर विराजमान हैं। वेदों का अध्ययन कर ही मनुष्य ईश्वर, आत्मा तथा प्रकृति सहित अपने कर्त्तव्य और अकर्त्तव्यों का बोध प्राप्त करता है। वह वेद ज्ञान को आचरण में लाकर ही दुःखों से मुक्त होकर आत्मा की उन्नति कर सुखों को प्राप्त होकर मृत्यु के बाद सब दुःखों व क्लेशों से रहित मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। वेद प्रतिपादित ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अर्थात् योगाभ्यास करते हुए जीवन जीने से ही मनुष्य को ईश्वर का साक्षात्कार होकर धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष सिद्ध होते हैं। यही मनुष्य की आत्मा के प्राप्तव्य लक्ष्य हैं।

पाँच हजार वर्षों से कुछ अधिक वर्ष पूर्व हुए महाभारत युद्ध के बाद देश-देशान्तर में अव्यवस्था फैल गई थी जिसके कारण वेदों के सिद्धान्तों की सत्य शिक्षा व उनके प्रचार का प्रायः लोप हो गया था। जिस प्रकार सूर्य के अस्त होने पर अन्धकार होकर रात्रि हो जाती है इसी प्रकार वेदों की सत्य शिक्षाओं का लोप हो जाने के कारण सत्य ज्ञान का भी लोप होकर अज्ञान रूपी रात्रि का प्रादुर्भाव हुआ था जिसने

अज्ञान, अन्धविश्वासों, मिथ्या सामाजिक परम्पराओं तथा अविद्या को जन्म दिया। आज भी अधिकांश रूप में यही स्थिति देश देशान्तर में जारी है। देश देशान्तर में वेदों की शिक्षाओं से रहित मत-मतान्तर प्रचलित हैं जिनसे ईश्वर के सत्यस्वरूप सहित सत्य विद्याओं का ज्ञान नहीं होता। किसी को न तो ईश्वर का साक्षात्कार ही होता है और न ही अकर्त्तव्यों का ज्ञान होता है जिस कारण से संसार में अकर्त्तव्यों को करने से अशान्ति व दुःखों का विस्तार हो रहा है। वैदिक धर्म प्राणियों पर दया, अहिंसा तथा करुणा पर आधारित है। इसका वर्तमान संसार में लोप ही प्रतीत होता है। इस कारण भी संसार में अनेक प्रकार से हिंसा का वातावरण देखा जाता है। लोग सत्य धर्म का पालन न कर अपने प्रयोजन की सिद्धि में हठ, दुराग्रह एवं अविद्यादि का प्रयोग करते हैं। जिससे मनुष्यों का जीवन दुःख व चिन्ताओं से युक्त होता है। इनका एक ही उपाय है कि वह महर्षि दयानन्द के विचारों का मनन करें और उनकी ग्राह्य शिक्षाओं को अपनायें जिससे मानव जाति का समुचित उत्थान होकर सभी मनुष्य जीवन के लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति में अग्रसर होकर उसे प्राप्त हो सकें।

ऋषि दयानन्द ने इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ की रचना की थी। इस ग्रन्थ के प्रथम दस अध्यायों में वेदों की मान्यताओं व सिद्धान्तों का प्रकाश व मण्डन किया गया है। सभी मतों के लोग इसे पढ़कर इसकी सत्यता की परीक्षा करते हुए इसके लाभ व हानि पर विचार कर सकते हैं। इस ग्रन्थ के उत्तरार्द्ध में संसार में प्रचलित प्रायः सभी मतों के सत्यासत्य की परीक्षा की गई है। इसे भी सभी लोग पढ़कर व विचार कर सत्य का ग्रहण व असत्य का त्याग करते हुए संसार को सुख व शान्ति को प्राप्त कराने की दिशा में अग्रसर कर सकते हैं। यही ऋषि दयानन्द का भी उद्देश्य विदित होता है। वर्तमान में कोई भी मत व सम्प्रदाय इस आवश्यकता की पूर्ति नहीं कर रहा है। ऐसा देखने में आता है कोई भी मत दूसरे मतों की अच्छी बातों को भी न तो ग्रहण करता है और न ही अपनी अतार्किक व अहितकर बातों का विचार कर उनका त्याग करने का प्रयत्न करता है। इस दृष्टि से मनुष्य परमात्मा प्रदत्त अपने मन, बुद्धि व आत्मा का सदुपयोग न कर उसके कुछ विपरीत आचरण करता हुआ दिखाई देता है। शतप्रतिशत लोग ऐसा नहीं करते परन्तु अधिकांश लोग ऐसा करते हुए दीखते हैं।

सभी मतों के लोग अपने आचार्यों की शिक्षाओं पर निर्भर रहते हैं। वह सत्य व असत्य का विचार प्रायः नहीं करते। वह अपने आचार्यों की प्रत्येक बात का विश्वास करते हैं। आचार्यगण अपने हित व अहित के कारण ही बातों को देखते व अपनाते हैं। इस कारण सत्य ज्ञान से युक्त ईश्वरीय ज्ञान वेदों के साथ न्याय नहीं हो पा रहा है। विचार करने पर इसका एक कारण यह भी लगता है कि आर्यसमाज को जिस प्रकार जन-जन तक वेदों का ज्ञान पहुँचाना था, उसमें भी वह सफल नहीं हुआ। वर्तमान में आर्यसमाज द्वारा किया जाने वाला वेदों का प्रचार आर्यसमाज मन्दिरों में अपने कुछ नाम मात्र के सदस्यों के मध्य सिमट कर रह गया है। हमारे विद्वान् व प्रचारक आर्यसमाज मन्दिर के साप्ताहिक सत्संगों व उत्सवों में जाकर प्रवचन व भजनों आदि के द्वारा प्रचार करते हैं। जन-जन तक हमारी बातें पहुँचती ही नहीं हैं जबकि अन्य मतों के लोग अपने अनुयायियों द्वारा जन-जन तक पहुँचने की हर प्रकार से चेष्टायें करते हैं और उन्हें येन केन प्रकारेण अपने मत में मिलाने का प्रयत्न करते हैं। कुछ मतों की संख्या वृद्धि व आर्यों वा हिन्दुओं की संख्या में कमी को भी इस सन्दर्भ में देखा समझा जा सकता है। आर्यसमाज के सुधी विद्वानों व शुभचिन्तकों को मत-मतान्तरों के प्रचार से प्रेरणा लेकर स्वयं भी वेदों का जन-जन में प्रचार करने की योजना बनानी चाहिये। यदि ऐसा न हुआ तो आने वाले समय में देश व आर्य हिन्दू जाति के लिये इस उपेक्षा के परिणाम गम्भीर व हानिकारक हो सकते हैं। मनुष्य व संगठनों का कर्त्तव्य होता है कि अपने कर्मों पर विचार करें और उन्हें प्रभावशाली बनाये जिससे अभीष्ट लाभों की प्राप्ति हो सके। इसके लिये हमें सुसंगठित होना होगा और योग्य व निष्पक्ष अधिकारियों को अधिकार प्रदान कराने होंगे, तभी हम अभीष्ट मार्ग का अनुगमन कर अपने उद्देश्य में सफल हो सकते हैं।

ईश्वर की व्यवस्था पर विचार करते हैं तो वह हमें सत्कर्मों का प्रेरक और कर्मानुसार जीवों को सुख व दुःख देने वाला विधाता सिद्ध होता है। वेद परमात्मा का विधान है जिसमें मनुष्य के कर्त्तव्यों व अकर्त्तव्यों का ज्ञान कराया गया है। जो मनुष्य वेदाध्ययन नहीं करता उसे अपने कर्त्तव्यों व अकर्त्तव्यों

का ज्ञान भी नहीं होता। ऐसी स्थिति में मनुष्य से अवैदिक कर्मों का हो जाना सम्भव होता है जिसका परिणाम ईश्वरीय दण्ड विधान के अनुसार दुःख होता है। इस कारण बुद्धि व वाणी प्राप्त सभी मनुष्यों का कर्त्तव्य है कि ऋषि के बनाये हुए वेदानुकूल सत्य ग्रन्थों वा शास्त्रों का अध्ययन करें और उनकी सत्य शिक्षाओं का आचरण, पालन व प्रचार करें। यदि हमने अपना कोई भी कर्म ईश्वर की आज्ञा के विपरीत किया तो हम दण्ड व दुःख के भागी अवश्य होंगे। एक स्कूल के अध्यापक का व परीक्षक का उदाहरण भी लिया जा सकता है। सब बच्चे स्कूल में प्रवेश लेने व अध्ययन करने में स्वतन्त्र होते हैं। जो स्कूल में प्रवेश लेकर परिश्रमपूर्वक अध्ययन करते हैं उनको ही ज्ञान की प्राप्ति होती है। परीक्षा में उनसे पूछे गये प्रश्नों के उत्तर अपने ज्ञान के अनुसार लिखने व देने की स्वतन्त्रता होती है। जो छात्र प्रश्नों के ठीक उत्तर देगा वह उत्तीर्ण होता है तथा जो नहीं देता वह फेल हो जाता है। परीक्षा के समय परीक्षक व अध्यापक अपने विद्यार्थियों को सही व गलत का ज्ञान नहीं कराते। एक अध्यापक अपने ही शिष्य को जो परीक्षा में प्रश्न का ठीक उत्तर नहीं देते, उन्हें अनुत्तीर्ण कर देता है। कुछ अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों को स्कूल की प्रतिष्ठा को देखते हुए प्रवेश भी नहीं दिया जाता। ऐसा न्याय का पालन करने वाले अध्यापक व शिक्षक करते हैं। ईश्वर का विधान भी तर्क एवं युक्तियों पर आधारित है। परमात्मा भी अपने ज्ञान वेद का अध्ययन न करने वाले तथा उसके अनुसार आचरण न करने वाले लोगों को उनकी योग्यता व अयोग्यता के अनुसार उत्तीर्ण व अनुत्तीर्ण तथा सुख व दुःख रूपी पुरस्कार व दण्ड देता है। हमें व संसार के सब लोगों को इस उदाहरण में निहित शिक्षा को जानकर उसके अनुसार व्यवहार करना चाहिये।

वेदों के अध्ययन व अध्यापन के मनुष्य जाति के लिए अनेक लाभ हैं। संसार में एक ही परमात्मा है जो सृष्टिकर्त्ता, मनुष्यादि प्राणियों को जन्म व सुख आदि देने वाला तथा सभी स्त्री व पुरुषों के कर्मों का न्याय करने वाला है। वेद ही ईश्वर का ज्ञान है इस कारण वेद ही सत्य व असत्य का निर्णय करने में परम प्रमाण हैं। इस कारण सभी मनुष्यों को अपने अपने विचारों को वेदानुकूल बनाकर सत्याचरण का पालन करते हुए ही अपने जीवन को उन्नति व सुख के पथ पर अग्रसर करना चाहिये। यदि ऐसा करेंगे तो सब मनुष्यों का वर्तमान जन्म सुखों से युक्त होने के साथ परजन्म भी सुखी व उन्नति को प्राप्त होगा। यदि इसका पालन न कर मत-मतान्तरों की वेदविरुद्ध शिक्षाओं में लगे रहेंगे तो हमारा परजन्म उन्नति के स्थान पर एक अनुत्तीर्ण विद्यार्थी के समान दुःखों से पूरित हो सकता है जैसा कि स्कूली शिक्षा में ठीक से अध्ययन न करने तथा प्रश्नों के सही उत्तर न देने वालों के साथ होता है। ऐसे अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों का भविष्य भी सुखमय न होकर दुःखमय ही होता है। हमें वेदों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। वेदों के सत्य एवं उपयोगी अर्थों को जानकर उनसे लाभ उठाना चाहिये और विश्व में एक सत्य मत की स्थापना में सहयोग देना चाहिये जिससे विश्व में शान्ति, स्वर्ग व रामराज्य जैसा वातावरण हो।

– मनमोहन कुमार आर्य

१९६ चुक्खूवाला-२, देहरादून- २४८००१

चलभाष- ९४१२९८५१२१

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल

अध्यक्ष - न्यास

सत्यार्थ सौरभ घर-घर पहुँचावें।

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य – मंत्री-न्यास

भंवरलाल गर्ग – कार्यालय मंत्री

डॉ.अमृत लाल तापड़िया – उपमंत्री-न्यास

सिर्फ देह ही सजाते रहे

आदमी पैदा होता है, खाता है, पीता है, परिवार बसाता है तथा दुनियादारी के और बहुत सारे काम करता है और मर जाता है, बस यही जिन्दगी है। क्या हमने कभी यह सोचा है कि परमात्मा ने हमें दुनिया में क्यों भेजा? हमें सुन्दर-सुन्दर मुखड़ा, प्यारी-प्यारी आँखें, कोमल-कोमल हाथ-पैर, मीठी-मीठी जुबान, आसमान की ऊँचाईयों को नापने वाली जवानी तथा अनुभव से परिपूर्ण बुढ़ापा क्यों दिया? हम तो पैदा होते ही सिर्फ अपनी देह को सम्भालने लगते हैं और सारी उम्र इस देह की रक्षा, सुरक्षा, कल्याण तथा सुन्दर और प्रभावशाली दिखने के तरीके ही ढूँढते रहते हैं। यह शरीर पाँच तत्वों का बना हुआ परमात्मा के हाथ की कठपुतली है, यह कभी भी टूट सकने वाली माटी का पुतला है जिसे हार्ट अटैक, कैंसर, डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर आदि बिमारियाँ कभी भी अपना शिकार बनाकर हमारी जीवन लीला समाप्त कर सकती हैं। हम अपनी देह को ठीक-ठाक रखने के लिए व्यायाम, योगा तथा कई प्रकार के खेल खेलते हैं। अच्छी-अच्छी प्रभावशाली पोशाकें पहनते हैं, पौष्टिक भोजन खाते हैं ताकि हमारा शरीर तथा दिमाग तंदरूस्त रह सके। अपने आपको सुन्दर, आकर्षक तथा प्रभावशाली दिखाने के लिए इत्र, पर्फ्यूम, पाउडर, क्रीम आदि प्रयोग करते हैं। आजकल पुरुष तथा स्त्रियाँ चेहरे की सजावट के लिए ब्यूटी पार्लर जाकर तथा हजारों रुपये खर्च करके कुछ घण्टों के लिए अपने आपको किसी फिल्म के हीरो तथा हीरोईन की तरह सुन्दर तथा आर्कषक बनाते हैं। आजकल कुछ अमीर लोग अपने आपको सदाबहार युवा बनाने के लिए प्लास्टिक सर्जरी भी कराने लगे हैं। कहना ना होगा कि कुछ लोग जितना अपने आपको सुन्दर बनाने के लिए खर्च करते हैं इतना तो उनका खर्चा खाने, पीने के लिए किचन पर भी नहीं होता होगा। लेकिन पाँच तत्वों से बना यह शरीर तो नाशवान है, बचपन, लड़कपन, जवानी तथा बुढ़ापा और फिर खत्म कहानी। पूछा जा सकता है कि क्या परमात्मा ने अपनी इस निरन्तर चलने वाली सृष्टि में किसी मकसद के लिए तो भेजा होगा? आदमी उम्र भर पाप कमाता है, झूठ बोलता है, कपट-छल करता है किसलिये? या तो पैसा कमाने के लिए, या फिर अपनी काया की सुरक्षा या सुन्दरता के लिए या फिर सगे, सम्बन्धियों या मित्रों को कोई फायदा पहुँचाने के लिए, जिनमें से कोई भी अंतकाल उसे पाप कर्मों के फल से बचा नहीं सकता। आदमी की सारी उम्र धन, दौलत, मकान, जमीन, जायदाद जोड़ने में लगी रहती है। आदमी सारी उम्र काम, क्रोध, मोह तथा अहंकार का कैदी बना रहता है। विषय विकारों में लगा रहता है। धीरे-धीरे शरीर की क्षमता कम हो जाती है, जवानी ढ़ल जाती है, फूल सा सुन्दर चेहरा मुरझा जाता है, उस पर झुरियाँ पड़ जाती हैं, दांत टूट जाते हैं, सुनाई नहीं देता, आँखों में मोतियाबिन्द आने के कारण दिखाई नहीं देता। जिस घर के बेटों के लिए उसने अपना बचपन, जवानी सब कुछ दांव पर लगाकर उनके लिए सुख सुविधायें जुटाई थीं, वही घरवाले उसकी सेवा करते-करते ऊब जाते हैं और उसके दुःख तकलीफ देखकर कहते हैं 'बाबे को तो अब चला ही जाना चाहिए।' यह सब देखकर आदमी बहुत पछताता है उसे कबीर की यह पंक्तियाँ याद

आती हैं-

आच्छे दिन पाछो गये, किया ना प्रभु से हेत।
अब पछताये क्या होत, जब चिड़िया चुग गई खेत।

उसे हर समय मौत अपने चारों तरफ मंडराती हुई दिखाई देती है, मरने से उसे डर लगता है। उसे महसूस होता है कि अगर उसने अपनी सारी जिन्दगी का कुछ भाग प्रभु भजन में लगाया होता, अगर वह सत्संग में गया होता, अगर उसने गरीबों, बेचारों, अनाथों, जरूरतमन्दों, अपाहिजों की सेवा की होती, अगर उसने अपनी आमदनी का कुछ भाग दान, पुण्य, परहित में लगाया होता तो यह 'नेक कमाई' जरूर उसके काम आती। काश! अपना परलोक सुधारने के लिए समय पर जागता, ध्यान करता। उसने उम्रभर कोई भी ऐसा काम नहीं किया जिससे परमात्मा उसके पापों को माफ कर दे। यह जीवन अब खत्म होने को है। मरने के बाद उसे यमलोक घसीट कर, जलती हुई आग में से कोड़े मारते हुए ले जाया जायेगा। (किंवदन्ती) यम की मार से उसे केवल

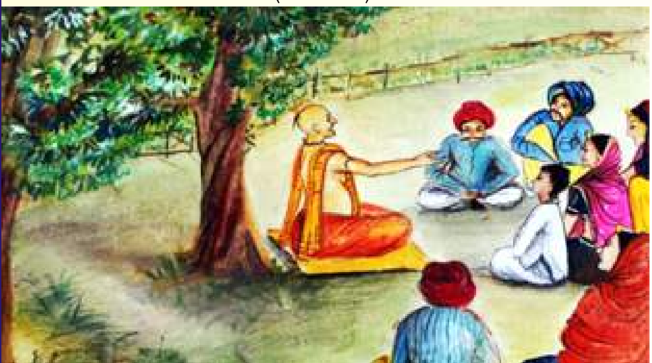

उसके अच्छे कर्म, प्रभु भक्ति, सत्संग, परहित, जनसेवा, सिमरन ही बचा सकते थे लेकिन उम्र भर वह तो विषय विकारों के दल-दल में फसा रहा। ये पूंजी कमाने की तो उसे फुर्सत ही नहीं मिली। परमात्मा उसे नर्क की भट्टी में झोंक देगा। एक बार फिर वह लाख चौरासी के दुष्चक्र में फस जायेगा। आदमी सारी उम्र अपनी देह को सजाता, संवारता तथा अच्छे पदार्थ खिलाकर खुश करता रहता है, जबकि उसकी आत्मा सेवा, सिमरन, परोपकार करने के तरसती रहती है। इस नारकीय स्थिति में पहुँचाने वाला आदमी लोगों को अच्छे कर्म करने, पाप ना करने, सेवा, सिमरण तथा

सत्संग में समय लगाने की सलाह देता है। और यह भी कहता है कि प्राणियों को जहाँ अपने शरीर का ध्यान रखना चाहिये वहाँ आत्मा को भूखा नहीं मारना चाहिए। हमारे शरीर में आत्मा हमारे शिक्षक का काम करती है जो कि मनुष्य को समय-समय बुरे कामों को ना करने तथा धर्म, कर्म, आध्यात्मिकता, पर सेवा, परमात्मा के सिमरन की शिक्षा देता रहता है। हमें आत्मा की आवाज जरूर सुननी चाहिए।

-प्रो. शामलाल कौशल
मकान नं. ९७५, बी/२०
ग्रीन रोड़, रोहतक, हरियाणा- १२४००१

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतनलाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, श्री सुदर्शन कुमार कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद

स्वास्थ्य ही वास्तविक सम्पत्ति

कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो वृद्धावस्था को प्राप्त नहीं करता है। इस धरा पर प्रत्येक व्यक्ति अपरिहार्य रुप से प्रकृति द्वारा निर्धारित जीवन चक्र में से गुजरता है जो उसे बचपन, किशोरावस्था, वयस्कता तथा प्रौढ़ावस्था के भिन्न-भिन्न चरणों में ले जाता है। प्रत्येक चरण का एक विशिष्ट जोश या उत्साह होता है, उसके साथ उत्तरदायित्व जुड़े रहते हैं तथा उस चरण विशेष की विशिष्ट समस्याएँ भी होती हैं। आमतौर पर, आयु के बढ़ने के साथ-साथ, सम्पूर्ण परिदृश्य में आमूल-चूल परिवर्तन होता है। उत्तरदायित्व अगली पीढ़ी को सौंप दिए जाते हैं तथा धीरे-धीरे जोश कम होता जाता है और उसके स्थान पर निरसता और उकताहट का जन्म होता है जिसके परिणामस्वरूप अनेक जटिल समस्याओं का जन्म होता है जिनके कारण प्रभाविता में रुकावट पैदा हो जाती है। इन्ही समस्याओं के कारण किसी भी व्यक्ति के स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। आयु के बढ़ने के साथ आने वाली सामान्य स्वास्थ्य समस्याओं के साथ-साथ यह सभी समस्याएँ एक अपरिवर्तनशील स्पैम साबित होती हैं। इस समय आवश्यकता इस बात की होती है कि अपनी आशा को बनाए रखा जाए तथा अपनी जिन्दगी को नए उत्साह तथा नवीन अनुभवों के साथ जागृत किया जाए।

स्वास्थ्य क्षेत्र के साथ जुड़ी दिक्कतों और दुखों को निम्नलिखित संकलनों के माध्यम से बेहतर समझा जा सकता है-

शारीरिक स्वास्थ्य

नियमित रूप से ऐसी शारीरिक गतिविधि जो न केवल सुरक्षित है अपितु आनन्ददायक भी है, तो उससे दो उद्देश्य प्राप्त होंगे- इससे न केवल आपके वजन पर नियंत्रण रखते हुए शरीर स्वस्थ रहेगा बल्कि एक ऐसी जीवनशैली भी आपको प्राप्त होगी जो खुशनुमा और आनन्दप्रद होगी।

एक अच्छी नींद आपके लिए वह सुखद परिणाम दे सकती है जो कि किसी दवा से प्राप्त नहीं होंगे। इस तथ्य के पीछे वैज्ञानिक आधार है कि जैसे-जैसे हमारी उम्र बढ़ती है हमारी नींद कम होती चली जाती है तथा हमारी नींद की गुणवत्ता में भी गिरावट आती है। केवल हमारी सरल चरणबद्ध निर्देशिका का पालन करें और अनिद्रा आपको कभी भी परेशानी नहीं करेगी।

कमजोर हड्डियाँ, दांतों सम्बन्धी रोग, नजर, श्रवण तथा पैरों के रोग, रक्त दाब तथा कब्ज उम्र के साथ होने वाली सामान्य समस्याएँ हैं तथा जिनसे व्यायाम आदि करने से बचा जा सकता है। तथापि, इस अवस्था में मधुमेह, कैंसर, असंयत मूत्रण, हृदय वाहिका रोग, उन्माद तथा सन्धिशोथ जैसे खतरनाक रोग भी सम्भव हैं। इनका एक ही हल है कि आप नियमित स्वास्थ्य जाँच तथा डॉक्टर के साथ सलाह मशविरा करते हुए अपने आप को जागरूक बनाए रखें।

शारीरिक स्वास्थ्य खान-पान की स्वस्थ आदतों के बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता है। हमारे भली-भाँति अनुसंधान की गई आहार निर्देशिका के आधार पर आप बेहतर खान-पान ग्रहण कर सकते हैं तथा आपको अपने आहार में कोई अधिक कमी भी नहीं करनी होगी- आपको पौष्टिकता की अधिकतम मात्रा की प्राप्ति के साथ पूर्ण संतुष्टि भी प्राप्त होगी।

यदि आप अकेले रहते हैं, तो आपको अनेक शारीरिक समस्याओं से ग्रसित होने की सम्भावना होती है, जो कि परिवार के अन्य सदस्यों को नहीं होती हैं। अकेलापन और एकाकीपन इसका केवल एक हिस्सा ही है। अपने पड़ोसियों को जानने का प्रयास करें और हमेशा सुरक्षा प्रणाली को सक्रिय रखें। यदि आपातकालीन सम्पर्क नम्बरों को सुलभ रूप से रखा जाता है तो यह बहुत अधिक लाभप्रद हो सकते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य

स्वस्थ होने का अर्थ केवल शारीरिक रूप से स्वस्थ होने तक सीमित नहीं होता है। शारीरिक स्वास्थ्य भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना की मानसिक स्वास्थ्य। इन दोनों में क्या अन्तर है तथा उनके स्तर पर विचार करते समय किन-किन पैरामीटरों पर ध्यान दिया जाता है? उम्र के बढ़ने के साथ अवसाद एक मुख्य स्थान ले लेता है। अनजाने में अधिकांश व्यक्ति इसकी खतरनाक पकड़ में फंस जाते हैं, और कभी-कभी तो उन्हें इसके लक्षणों की भी जानकारी नहीं होती है। यदि आप भूख न लगने के साथ-साथ बेचैनी, चिड़चिड़ापन तथा आप अधिक अपराध बोध तथा नगण्यता के विचारों का अनुभव करते हैं- तो निःसंदेह आप गम्भीर मानसिक परेशानियों का सामना कर रहे हैं। इसका एकमात्र हल यह है कि आप अपनी जिन्दगी से उत्साह को दूर न होने दें तथा सजग और सक्रिय रहें। मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ द्वारा प्रोत्साहन भी लाभदायक साबित हो सकता है।

कुछ भी कहिए, जैसा कि सदियों से कहा जा रहा है कि **वास्तव में स्वास्थ्य ही वास्तविक सम्पत्ति है।**

समाचार

गौरक्षक बलिदानियों को श्रद्धांजलि

सन् १९६६ में दिल्ली के बोट क्लब में हुए गौ रक्षा आन्दोलन के बलिदानियों को नमन करते हुए विश्व हिन्दू परिषद् के राष्ट्रीय प्रवक्ता विनोद बंसल ने कहा कि ७ नवम्बर १९६६ को विभिन्न सम्प्रदाय के साधु-संन्यासियों ने पूरे भारत में गौ माता की हत्या पर प्रतिबन्ध लगाने का कानून बनाने की माँग को लेकर एक विशाल आन्दोलन किया था। इस अवसर पर बोट क्लब पर हुये ऐतिहासिक प्रदर्शन में देश भर के लाखों लोगों ने भाग लिया। तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी के नेतृत्व वाली सरकार ने निहत्थे हिन्दुओं पर गोलियाँ चलवा दी थी जिसमें अनेक गौ भक्तों का बलिदान हुआ था। उन सभी बलिदानियों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उन्होंने केन्द्र सरकार से मांग की कि सम्पूर्ण भारत में कानून बनाकर गौ हत्या पर प्रतिबंध लगाया जाए। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि जिस प्रकार श्री राम मंदिर, धारा ३७०, सी ए ए जैसे निर्णय हुए हैं अब यह शुभ कार्य भी राष्ट्रवादी सरकार मोदी जी के करकमलों से ही होना है।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में ७ नवम्बर १९६६ के गौरक्षक बलिदानियों को श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु ७ नवंबर २०२० को ऑनलाइन गोष्ठी का गूगल मीट पर आयोजन किया गया। उल्लेखनीय है कि इस दिन बोट क्लब में स्वामी करपात्री जी, आर्य नेता रामगोपाल शालवाले, प्रो रामसिंह, शंकराचार्य निरंजन देव तीर्थ के नेतृत्व में गौ रक्षा हेतु आन्दोलन किया गया था जिसमें हजारों लोग गोलियों से भून दिये गए थे। उन गौ भक्तों की स्मृति में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया ।

गुरुद्वारा के सन्दर्भ में पाकिस्तान के निर्णय की निन्दा

पाकिस्तान सरकार द्वारा गुरुद्वारा करतारपुर साहिब के प्रबन्धन को पाकिस्तान सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (PSGPC) से हटा कर 'इवैक्यूई ट्रस्ट प्रॉपर्टी बोर्ड' (ETPB) को दिए जाने की विश्व हिन्दू परिषद कड़ी निन्दा करती है।

इस सम्बन्ध में यह तर्क दिया जाना कि कमेटी गुरुद्वारे के प्रबन्धन के काम में हिस्सेदार होगी, वह सिर्फ भ्रम या मिथ्या प्रचार के अतिरिक्त कुछ नहीं क्योंकि ETPB के ६ सदस्यों में से एक भी सिख नहीं है। ETPB ने जिस प्रकार गुरुद्वारे के प्रोजेक्ट प्रबन्धन विभाग को उसके खातों को भी देखने का अधिकार दिया है, उससे स्पष्ट होता है कि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी उस पवित्र गुरुद्वारे को 'रहत' और 'मर्यादा' के साथ स्वैच्छिक रूप से नहीं चला सकती।

इससे स्पष्ट होता है कि विश्व के पवित्रतम गुरुद्वारे को पाकिस्तान की सरकार और अंततोगत्वा वहाँ का मुस्लिम समुदाय हड़पना चाहता है। भारत सरकार के विदेश विभाग ने अपनी कड़ी आपत्ति दर्ज करा दी है। विश्व हिन्दू परिषद् भी मांग करती है कि पाकिस्तान सरकार गुरुद्वारे के प्रबन्धन को वहाँ के सिख समुदाय को सौंपे।

- विनोद बंसल, राष्ट्रीय प्रवक्ता-विश्व हिन्दू परिषद्

योगसाधकों का किया सम्मान

पतंजलि योगपीठ हरिद्वार द्वारा संचालित पतंजलि योग समिति जोधपुर द्वारा आयोजित २५ दिवसीय सहयोग शिक्षक प्रशिक्षण शिविर आज सम्पन्न हुआ।

होलिस्टिक योग संस्थान, पावटा बी रोड़ पर अयोजित यह शिविर आज आर्य समाज मंदिर महर्षि पाणिनिनगर गोकुलजी की प्याऊ पर सम्पन्न हुआ। इस शिविर में ३४ योग साधकों ने भाग लिया। समापन समारोह हवन के साथ यज्ञ के ब्रह्मा सेवाराम आर्य के सान्निध्य में आरम्भ हुआ। पतंजलि योग समिति के जिला प्रभारी भगवान राम परिहार ने बताया कि परम पूज्य योग ऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज की प्रेरणा से देश के सभी जिलों व तहसीलों में शिविर चलाया जा रहा है। जिससे युवा भाई बहिन योग से जुड़कर अपना स्वाथ्य ठीक रख सकें। शिविर में योग साधकों में योगासन प्रतियोगिता में प्रथम अरुण जैन व द्वितीय जतीन भाटी को पुरस्कृत किया साथ ही योगा सर्टिफिकेशन बोर्ड में उत्तीर्ण सभी साधकों को स्मृति चिह्न एवं सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक प्रदान की। खुशबू, नेहा, अनिता, अंजलि, रविश आर्य, अदिति आर्या एवं अमिता ने भजन व देशभक्ति गीत प्रस्तुत किया। इस अवसर पर अतिथि पतंजलि के राज्य प्रभारी समदरसिंह, करणाराम जवालिया, संरक्षक शिवरत्न जी आर्य, प्रमोद कुमार, श्यामलाल बिश्नोई, सेवाराम आर्य, राजेन्द्र वैष्णव ने अपने विचार व्यक्त कर योग को अपने जीवन में उतारने व प्रतिदिन योग करना जरुरी बताया। सोहनसिंह, नरेन्द्र आर्य, रविश, अदिती आर्या, श्रीमति संतोष आर्या, ललिता सांखला, अंजली, अनिता, हेमलता एवं सभी सदस्यगण उपस्थित थे। अन्त में प्रधान कैलाश चन्द्र आर्य ने सभी अतिथिओं का धन्यवाद ज्ञापित किया।

- कैलाश चन्द्र आर्य, प्रधान

बनबना की दोंनो बहने मानसी-दीपांशी हुई सम्मानित

महर्षि दयानन्द आर्ष कन्या गुरुकुल, मोहन बड़ोदिया, जिला- आगर में १० दिवसीय महिला शक्तिकरण संस्कृत शिक्षान्त समारोह में बनबना की कु. मानसी उपाध्याय व दीपांशी उपाध्याय को उनकी प्रतिभा, संस्कृत का उद्भट ज्ञान, गीता के १२ अध्यायों का कंठस्थ होना, संस्कृत पढ़ाने-समझाने का कुशल तरीका व आर्य वीरांगना के रूप में शस्त्र कला की उनकी प्रस्तुति पर महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल द्वारा उपवस्त्र, वस्त्र भेंट व दो बहनों को ६००० रू.नगद भेंट कर सम्मानित किया।

इस अवसर पर मंच पर हरिशंकर अग्निहोत्रि (आगरा, उ.प्र.), प्रकाश आर्य महू (सार्वदेशिक आर्य महासभा-महामंत्री) गुरुजी काशीराम आर्य 'अनल' (कानड़), सुश्री प्रज्ञा विद्यालंकार (गुरुकुल हाथरस), शुचिता आर्या (देहरादून), राधाजी आर्या (भुसावल-भरतपुर राजस्थान), शान्तिलाल विश्वकर्मा, वेदप्रकाश आर्य, भरत आर्य, दिलीप आर्य उपस्थित थे। दोंनो बहनें अब मालवा प्रान्त के क्षेत्रों में आयोजित आर्ष सम्मेलनों को सम्पन्न बनाने में सक्रिय भूमिका निभावेंगी।

इनकी इस सफलता पर योगेश भोपे, हेमन्त शर्मा, रामस्वरूपजी ब्रह्मचारी, राकेश पाटीदार, उमा परमार, विनिता ठाकुर, रेणुका, पद्मजा, शान्तिदेवी शर्मा तथा आर्य समाज नागदा के समस्त सभासदों ने हर्ष जता बधाई दी। कार्यक्रम का संचालन मुकेश आर्य ने किया। यह जानकारी शिवसिंह आर्य ने दी।

सऊदी अरब में कार्यरत कामगारों को बड़ी राहत, कफाला व्यवस्था समाप्त

विदेशी कामगारों से सम्बन्धित नियमों में बड़े सुधार का ऐलान करते हुए सऊदी अरब ने उन्हें मालिक कम्पनी की इजाजत के बिना नौकरी बदलने की इजाजत दे दी।

इसके अलावा उन्हें विदेश आने-जाने और देश छोड़ने के लिए भी मालिक की अनुमति की जरूरत नहीं होगी। अभी तक इन सभी कार्यो के लिए विदेशी कामगारों को जिस कम्पनी में वे काम कर रहे हैं,

उसकी मंजूरी की जरूरत होती थी।

सऊदी अरब की मौजूदा 'कफाला' व्यवस्था के अन्तर्गत निजी कम्पनियाँ विदेशी कामगारों को सऊदी अरब आने के लिए स्पॉन्सर करती हैं। कफाला के नियमों के तहत, विदेशी कामगार इन मालिक कम्पनियों की इजाजत के बिना न तो अपनी नौकरी बदल सकते हैं और न ही देश छोड़ सकते हैं। उनका पासपोर्ट कम्पनी मालिक के द्वारा ले लिया जाता था।

कफाला व्यवस्था के तहत मालिक कम्पनियाँ विदेशी कामगारों के काम पर आना बन्द करने पर उनके खिलाफ 'भागने की' रिपोर्ट भी दर्ज करा सकती है और उनकी इस रिपोर्ट से विदेशी कामगार एक तरह से भगोड़े बन जाते हैं। सऊदी अरब की ये व्यवस्था मानवाधिकार संगठनों के निशाने पर भी रही है और वे इसे एक तरह की बन्धुआ मजदूरी बता चुके हैं।

अब सऊदी अरब की सरकार ने इस व्यवस्था में बड़े सुधारों का ऐलान किया है। मानव संसाधन मंत्रायल के उपमंत्री अब्दुल्लाह बिन नसीर अबुथुनायन ने ये ऐलान करते हुए कहा कि अब मजदूरों को नौकरी बदलने या विदेश आने-जाने के लिए मालिक कम्पनी की अनुमति की जरूरत नहीं होगी।

नई 'एबशर' व्यवस्था के तहत विदेशी कामगार बिना मालिक की इजाजत के नौकरी बदलने और देश से बाहर जाने के लिए 'एग्जिट एंड री-एंट्री वीजा' के लिए आवेदन कर सकेंगे।

सरकार के अनुसार, नए नियम १४ मार्च, २०२१ से प्रभावी होंगे सऊदी सरकार के इस कदम से लगभग एक करोड़ विदेशी कामगारों को फायदे का अनुमान है।

अबुथुनायन ने कहा कि सरकार देश में एक बेहतर श्रम बाजार बनाना चाहती है और मजदूरों के लिए काम के माहौल को भी बेहतर करना चाहती है।

शोक संवेदना

स्तब्ध कर देने वाला शोक समाचार

आज हमारे साथी, कोटा के श्री राम प्रसाद जी याज्ञिक के आकस्मिक निधन (८ नवम्बर २०२०) के दुखद समाचार से हम स्तब्ध हैं। अभी कुछ माह पूर्व कोटा जाना हुआ था, तब अन्य साथियों के साथ श्री याज्ञिक जी से भी मिलना हुआ था। उदयपुर नवलखा में बन रही संस्कार वीथिका के निमित्त हमारी अपील पर उन्होंने तुरन्त ५१००० रुपये का सात्विक दान भी दिया था। १९७५ से १९८५ तक हम कोटा में पदस्थापित थे। तब जो टीम हमारे साथ अहर्निश आर्यसमाज के प्रचार में लगी रहती थी, भाई राम प्रसाद याज्ञिक भी उस टीम का प्रमुख हिस्सा थे। वे अत्यन्त स्वाध्यायशील और सरल स्वभाव के थे। मैंने उनको कभी उग्र नहीं देखा था। उच्च राजकीय पद (मुख्य अभियन्ता IMTI) से सेवानिवृत्त होने के पश्चात् वे यथासंभव कोटा आर्यसमाज के क्षेत्र में सक्रिय रहते थे। उनका यूँ अकस्मात् चले जाना आर्य समाज की अपूरणीय क्षति है। परमेश प्रभु के चरणों में विनय है कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें और प्रिय मनीष एवं अन्य परिवारीजनों को इस गहन दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करें।

अमर मुनि जी विदा

आर्य जगत्, विशेष रूप से राजस्थान के, आर्य नेता मनीषी चिन्तक हमारे अग्रज भाई अमर मुनि जी के आकस्मिक निधन के समाचार से अत्यन्त दुःख का अनुभव कर रहे हैं। माननीय श्री अमर मुनि ने राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री जैसे पद को सुशोभित किया। वह ओजस्वी वक्ता होने के साथ-साथ कुशल संगठक, संस्कारवेत्ता एवं उच्च कोटि के विद्वान् थे। आर्य समाज की प्रगति में उनका अतुलनीय योगदान रहा। उनके इस प्रकार से चले जाने से सम्पूर्ण आर्य जगत् की भी अपूरणीय क्षति हुई है। उनकी सौम्य छवि,

मुस्कानयुक्त चेहरा, मृदु वार्तालाप की शैली कदापि भी भूली नहीं जा सकती। अलवर क्षेत्र को उन्होंने वर्तमान में जिस प्रकार संभाला था निश्चित अलवर के आर्य बन्धु उन्हें भुला नहीं सकते। इस दुख की घड़ी में श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के सभी न्यासी बन्धु एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार के सभी सदस्यगण हार्दिक संवेदना प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा के श्री चरणों में विनय करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें। इन्हीं भावनाओं के साथ आदरणीय अमर मुनि जी के प्रति श्रद्धांजलि प्रकट करते हैं।

– अशोक आर्य, उदयपुर

ईश्वर भक्ति क्यों?

ईश्वर के गुणगान रूप स्तुति अवश्य करनी चाहिए। परन्तु यह स्मरण रखना होगा कि केवल वाणी से प्रभु-महिमा गान मात्र से बात नहीं बनेगी वरन् जैसे गुण प्रभु में हैं वैसा ही स्वयं बनने का प्रयास करना होगा तभी स्तुति से लाभ होगा। महर्षिवर लिखते हैं- 'इससे अपने गुण-कर्म-स्वभाव भी तद्वत् करना। जैसे वह न्यायकारी है, तो आप भी न्यायकारी होवे और जो केवल भांड के समान परमेश्वर के गुण कीर्तन करता जाता, और अपने चरित्र नहीं सुधारता, उसका स्तुति करना व्यर्थ है। (सत्यार्थ प्रकाश-सप्तम समुल्लास)

कुछ विचारशील जन प्रायः शंका करते हैं कि आज संसार में, विशेष रूप से भारत वर्ष में दिन-रात कथा, कीर्तन, अखण्ड पाठ होते हैं फिर क्यों आज देश का सर्वविध पतन हो रहा है? हमें विश्वास है कि महर्षिवर के उक्त उद्धृत कथन से उनको अपना समाधान मिल गया होगा। वस्तुतः जो कुछ हो रहा है वह बाह्य आडम्बर मात्र है। जब तक महापुरुषों व ईश्वर के उदात्त गुणों के अनुरूप अपने-अपने चरित्र सुधार का उपक्रम भक्तजन न करेंगे तब तक कोई लाभ न होगा।

गुण-कर्म-स्वभाव में बढ़ती समानता मित्रता उत्पन्न करती है। अखिल ब्रह्माण्ड का स्वामी जिसका मित्र हो उसके समक्ष समस्त भय, प्रलोभन कुछ मायने नहीं रखता। इतिहास ऐसे ईश्वर भक्तों के प्रेरक प्रसंगों से भरा पड़ा है। सबसे बड़ी बात यह है कि मित्र-मित्र को बुराई के रास्ते से बचाता है। प्रभु को मित्र बनाने पर वह हमारी अन्तरात्मा में कोई भी बुरा कार्य करते समय प्रेरणा कर हमें उस मार्ग से बचाता है।

ईश्वर भक्ति का लाभ-

स हि रत्नानि दाशुषे सुवाति सविता भगः।
तं भागं चित्रमीमहे।। - ऋ. ५/८२/३

जो मनुष्य समस्त रत्नों के दाता परमात्मा का सेवन करते हैं (उपासना करते हैं) वे अद्भुत ऐश्वर्य को पाते हैं।

वैसे सत्य यह है कि प्रभु तो सभी को शुभ कार्यों की प्रेरणा देते हैं पर जो उसको अपने निकट नहीं मानते उससे प्रीति नहीं रखते वे उस प्रेरणा को अनसुनी कर देते हैं परन्तु जो प्रभु की मित्रता अनुभव करते हैं, वे उस परमसखा की प्रेरणा को सुन दुष्कर्मों में प्रवृत्त होने से स्वयं को बचाकर उन दुष्कर्मों के फलस्वरूप मिलने वाले दुःखों से बच जाते हैं। प्रभु भक्ति का यह कितना बड़ा लाभ है।

मित्रता समान गुण-कर्म-स्वभाव वालों में होती है। जब हम प्रभु की मित्रता के अभिलाषी होंगे तो अधिकाधिक पवित्र व उदात्त भावों को ग्रहण करने की ओर अग्रसर होंगे। हमारे कर्मों में भी पवित्रता रखने का हम प्रयास करेंगे।

जीव किसी अन्य की साक्षी में दुष्ट कर्म-पाप कर्म करने से बचना चाहता है। जब वह समझता है कि उसे कोई देख नहीं रहा तो वह पाप कर्म में प्रवृत्त हो जाता है। परन्तु प्रभु भक्त सर्वत्र उस सर्वव्यापक प्रभु की उपस्थिति को अनुभव कर स्वयं को पापकर्म में प्रवृत्त होने से बचा लेता है।

ईश्वर भक्ति के प्रकार

ईश्वर भक्ति के तीन सोपान हैं- स्तुति, प्रार्थना और

उपासना। इन तीनों के महत्व और लाभ के बारे में जानने हेतु पाठकगण महर्षि दयानन्द के निम्न कथन को ध्यान से पढ़ें-

स्तुति- स्तुति से ईश्वर में प्रीति, उसके गुण-कर्म-स्वभाव से अपने गुण-कर्म-स्वभाव को सुधारना।

प्रार्थना- प्रार्थना से निरभिमानता, उत्साह और सहाय का मिलना।

उपासना-उपासना से परब्रह्म से मेल और उसका साक्षात्कार होना।

स्तुति- स्तुति के सन्दर्भ में कुछ चर्चा ऊपर की गई है। प्रभु के गुणों का ध्यान करने हेतु प्रथम यह आवश्यक है कि हम उसके गुण-कर्म-स्वभाव के बारे में यथार्थ ज्ञान प्राप्त करें। किसी इतर सत्ता के गुण ईश्वर में आरोपित कर स्तुति करना (जैसे कि आज प्रायः हो रहा है। जीवात्मा तथा प्रकृति के गुणों को ईश्वर में आरोपित किया जाता है) तो स्तुति न होकर निन्दा हो जावेगी और अभीष्ट परिणाम कदापि प्राप्त नहीं हो सकेगा। क्रमशः ....

- अशोक आर्य
नवलखा महल, गुलाब बाग

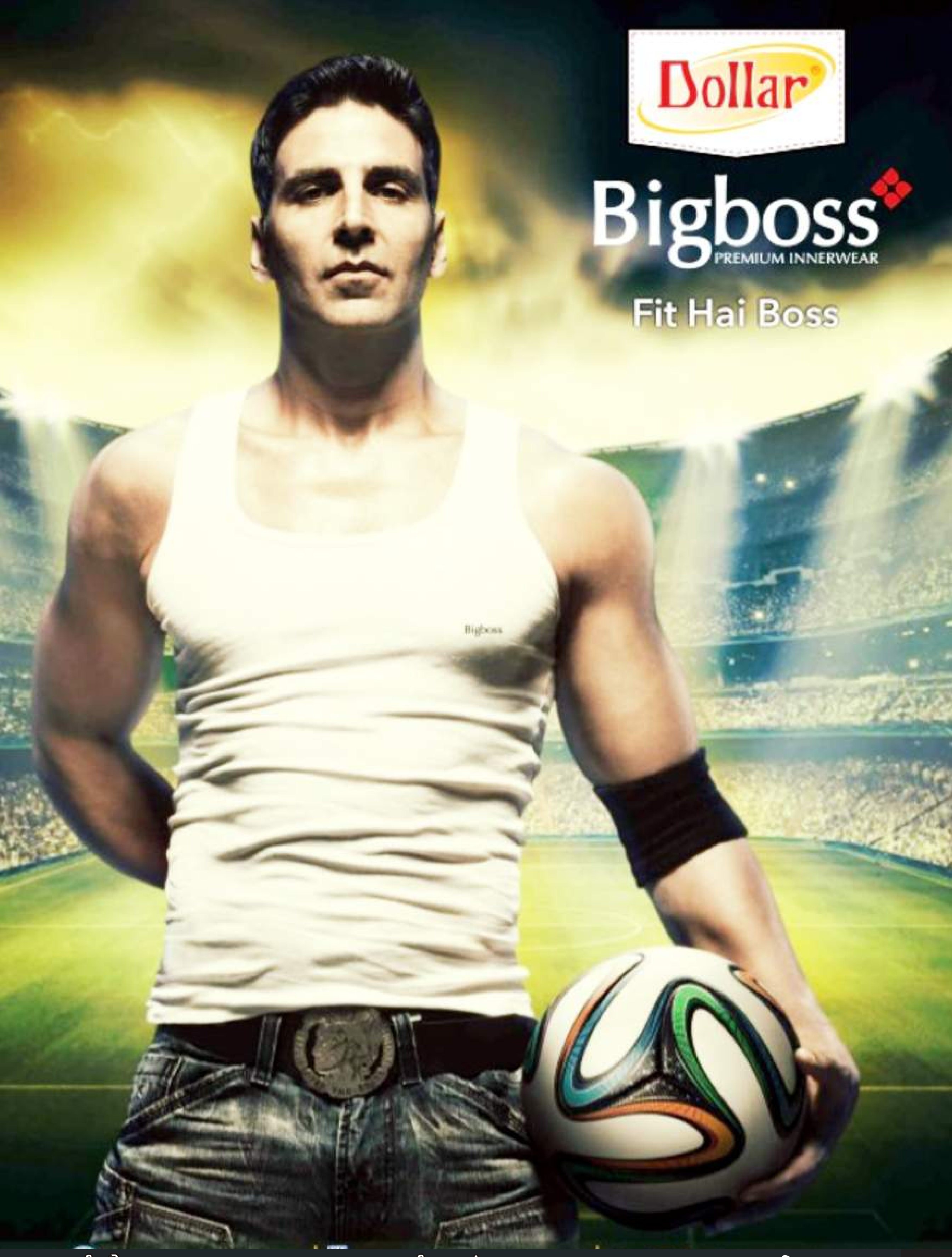
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
Bigboss

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 December-2020 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2019-2021

मनुष्य का यही मुख्य आचार है कि जो इन्द्रियाँ चित्त को हरण करने वाले विषयों में प्रवृत्त कराती हैं, उनको रोकने में प्रयत्न करे। जैसे घोड़े को सारथि रोक कर शुभ मार्ग में चलाता है, इस प्रकार इनको अपने वश में करके, अधर्म मार्ग से हठा के धर्म मार्ग में सदा चलाया करे।

- सत्यार्थ प्रकाश, दशम समुल्लास पृष्ठ २६०

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर